चन्दामामा
सितम्बर १९७८
Rs 1.35

DADDY
MUMMY
AND...
I
" ये सब मैंने अपने एको स्केच पेनसे बनाये हैं। "
EKCO
स्केच पेन
रंग ही रंग... जिनसे बच्चों को प्यार है. वे चाहते हैं—नित नये चित्र बनाना. अपने बच्चों की गुप्त कला को प्रोत्साहन दीजिए... उन्हें एको स्केच पेन का आकर्षक सेट उपहारस्वरूप दीजिए. ये कई मनपसंद रंगों में मिलते हैं.
EKCO
SKETCH PEN
वितरक :
किरण एण्ड कंपनी,
७३/९, शामसेट स्ट्रीट, बम्बई ४०० ००२
फोन : ३२४४३२
ADVERTS/WP/216/HIN/08
एको स्केच पेन से लिखने का मज़ा ही कुछ और है.

चन्दामामा

सितम्बर १९७८

संपादकीय	... ५	शहर की हवा	... ३३
लब्ध प्रणाशं	... ७	अगिया भूत	... ३८
भल्लूक मांत्रिक	... ११	राजा की भूल	... ४१
चंदन का पेड़	... १९	दुर्गा का पति	... ४४
वर की परीक्षा	... २४	वैणिक जयधर	... ४७
पिशाच का नाटक	... २७	वीर हनुमान	... ५१

भूल-सुधार

हमें खेद है कि चन्दामामा के अगस्त अंक में हमारे आदरणीय प्रधान मंत्री के संदेश की तारीख़ जून ३ के बदले जून ३१ मुद्रित है। अतः पाठकों से निवेदन है कि इसे सुधारकर पढ़ लें।

—प्रकाशक

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

इस महीने की बेताल कथा "चन्दन वृक्ष" है। जिम्मेदारी से पूर्ण पदों पर रहनेवालों को अपने कर्तव्यों के पालन में अनेक लोगों पर निर्भर रहना पड़ता है। चाहे राजा भी क्यों न हो, जब तक अपने अधीन रहनेवाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों पर हद से अधिक विश्वास करते हैं, तब तक हमें मानना होगा कि वे अपने कर्तव्यों का सही ढंग से पालन नहीं कर रहे हैं। इस कहानी की नीति यही है।

हमने अगले अंक से पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने का निश्चय कर लिया है। इसलिए पाठकों से अनुरोध है कि वे उपयोगी प्रश्न भेजने का कष्ट करें।

वर्ष : ३१ सितंबर १९७८ अंक : १

एक प्रति : १-२५ :: वार्षिक चन्दा : १५-००

असत्य स्सर्वलोकेस्मिन्
सततं सत्कृताः प्रियैः
भर्तारं नानु मन्यंते
विनिपातगंत स्त्रीयः ॥ १ ॥

[इस संसार में दुष्ट नारियाँ अपने पतियों द्वारा उनकी कामनाओं की पूर्ति करके संतोष प्रदान करने पर भी उनकी दुर्दशा के समय साथ नहीं देतीं, उनकी परवाह नहीं करतीं।]

एष स्वभावो नारीणां
अनुभूय पुरा सुखं
अल्पा मत्यापदं प्राप्य
दुष्यंति प्रजहा त्यपि ॥ २ ॥

[ऐसी नारियों का स्वभाव यों होता है—इसके पूर्व पर्याप्त सुख पाकर भी अपने पति को विपदा में फँसे देख उसका तिरस्कार करके त्यागने की कोशिश करती हैं।]

असत्यशीला, विकृता
दुर्ग्राह्य हृदया स्सदा
युवत्यः पाप संकल्पाः
क्षण मात्रा द्विरागिणः ॥ ३ ॥

[वे नारियाँ असत्य भाषण करते, विकृत चित्त हो, दुर्ग्राह्य मनवाली बन, पापपूर्ण हृदय को लेकर चंचल हृदया होती हैं।]

दुष्ट नारियाँ

लब्ध प्रणाश

[६२]

मगर मच्छ देरी से बन्दर के पास पहुँचा। साथ ही उसे चिंतित देख बंदर ने पूछा—"दोस्त, तुम विलंब से क्यों आये? लगता है कि तुम किसी चिंता में डूबे हुए हो! बात क्या है?"

इस पर मगर मच्छ ने कहा—"दोस्त मेरी पत्नी आज मुझ पर नाराज़ हो गई। उसने मुझे डांटा—'तुम तो कृतज्ञ हो! तुम्हें मुझे अपना चेहरा दिखाने में लज्जा नहीं होती? तुम रोज़ बंदर के यहाँ से फल स्वीकार करते हो, मगर बदले में तुमने उसे क्या दिया है? कम से कम उसे तुमने हमारे घर बुलाया तक नहीं। इसलिए तुम मेरे देवर बने उस बंदर को आज हमारे घर लिवा लाओ, वरना मैं आत्महत्या कर लूंगी। हम पुनः उसी लोक में मिलेंगे। ये बातें मेरी पत्नी याने तुम्हारी भाभी ने बतायी हैं। इसी बहस के कारण मेरे आने में विलंब हो गया है। तुम अभी मेरे साथ चलो। तुम्हारी भाभी घर साफ़ करके रंगोली बनाकर दर्वाजे पर प्रतीक्षा में बैठी रहेंगी।"

"भाभीजी का कहना सही है। जुलाहे जैसे ताने-बाने खींचते रहते हैं, वैसे बुद्धिमान को सदा धन बटोरने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेन-देन, रहस्यों का बताना व सुनना, खाना और खिलाना ये छठों आत्मीयता दिखाने के मार्ग हैं। मगर मैं तो वृक्षवासी हूँ, तुम जलवासी हो। ऐसी हालत में मैं तुम्हारे घर कैसे प्रवेश कर सकता हूँ? इसलिए तुम मेरी भाभी को यहाँ पर बुला आओ; मैं उनके चरणों में प्रणाम करके उनके आशीर्वाद पा लूंगा।" बन्दर ने समझाया।

इस पर मगर मच्छ ने कहा–"दोस्त, इस जल के नीचे एक सुंदर रेतीली टीले के पास मेरा घर है। इसलिए तुम मेरी पीठ पर सवार हो निडर चले आओ।"

बन्दर भी नये अनुभव प्राप्त करने को लालायित था। इसलिए उसने झट कह दिया–"तब तो देरी ही क्यों? जल्दी चलो! लो मैं अभी तुम्हारी पीठ पर सवार हो गया।" इन शब्दों के साथ बन्दर मगर मच्छ की पीठ पर सवार हो गया।

मगर मच्छ जब पानी की गहराई में जाने लगा, तो बन्दर डरकर बोला– "दोस्त, तेजी के साथ मत चलो! लहरों के धक्कों से मेरा बदन भीगता जा रहा है।"

मगर मच्छ ने सोचा–"यहाँ के पानी में गहराई है। बन्दर किसी भी हालत में अब बच नहीं सकता। वह तो पूर्ण रूप से मेरे अधीन में है। इसलिए मैं उसे असली बात कहे देता हूँ।" यों विचार कर मगर मच्छ ने बंदर से कहा–"दोस्त! मैं अपनी पत्नी की इच्छा की पूर्ति करने के लिए तुम्हें मारना चाहता हूँ। इसीलिऐ तुम्हें मीठी बातों से दगा देकर यहाँ तक ले आया हूँ। अब तुम्हारी मौत निकट आ गई है। इसलिए तुम एक बार अपने आराध्य देवता की प्रार्थना कर लो।"

बन्दर ने पूछा–"दोस्त! मुझे तुम लोग क्यों मारना चाहते हो? मैंने तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का आखिर क्या बिगाड़ा है? बताओ तो सही!"

"मेरी पत्नी का कहना है कि तुम अमृत जैसे जामून खाते हो, इसलिए तुम्हारे कलेजे में अमृत भर गया है। तुम्हारा कलेजा खाने से वह बुढ़ापे और मौत से भी बच सकती है, यों सोचकर उसने तुम्हें मेरे घर ले जाने को बाध्य किया है! इसीलिए मैं तुम को अपने घर ले जा रहा हूँ।" मगर मच्छ ने बताया।

ये बातें सुनने पर बन्दर को एक उपाय सूझा। उसने कहा–"मित्रवर, तुमने यह बात मुझे किनारे पर ही क्यों नहीं बताई?

में सदा अपने कलेजे को जामून की डालों में गुप्त रूप से छिपा रखता हूँ। मैं प्रति दिन कई दफ़े पेड़ पर चढ़ता-उतरता रहता हूँ? सिर्फ़ यह देखने के लिए ही कि मेरा कलेजा सुरक्षित है या नहीं? भाभी ने अगर मेरा कलेजा माँगा तो इससे बढ़कर मेरे लिए खुशी की बात क्या हो सकती है? मगर बिना कलेजे के मुझे भाभी के पास ले जाओगे तो फ़ायदा ही क्या?"

मूर्ख मगर मच्छ ने खुशी में आकर कहा—"तब तो मैं फिर से तुम को पेड़ के पास वापस ले चलता हूँ! तुम मुझे अपना कलेजा दे दो! इसके बिना मेरी पत्नी पानी तक न पीयेगी!" यों समझाकर मगर मच्छ ने बन्दर को वापस लाकर पेड़ के पास छोड़ दिया।

रास्ते में बन्दर ने अपनी कुशल के वास्ते कई देवताओं का स्मरण किया, पेड़ के समीप पहुंचते ही बड़ी तेजी के साथ पेड़ पर चढ़ गया। ऊँची डाल पर पहुंचकर गहरी सांस ली, तब सोचा—"हे भगवन! मेरी जान बच गई! बुजुर्गों ने यूँ ही नहीं बताया है कि अयोग्य व्यक्तियों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। विश्वास योग्य व्यक्तियों पर भी हद से ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए! और ऐसा विश्वास विपत्तियों का मूल कारण बनता है! अब मेरा पुनर्जन्म ही हो गया है!"

यों बन्दर विचार कर ही रहा था, तब मगर मच्छ ने कहा—"दोस्त! तुम जल्दी अपना कलेजा दे दोगे तो मैं उसे तुम्हारी भाभी को देकर उसका उपवास तुड़वा दूंगा।"

इस पर बन्दर ने व्यंगपूर्ण हँसी हँसकर कहा—"अरे दुष्ट! तुम तो नमक हराम हो! कहीं किसी के दो कलेजे होते हैं? यहाँ से तुरंत भाग जाओ। आइंदा कभी तुम इस पेड़ के नीचे क़दम रखने की धृष्टता न करो! एक बार विश्वासघात करनेवाला व्यक्ति फिर से ऐसा प्रयत्न करता है तो अवश्य उसका सर्वनाश हो जाता है।"

संसार के आश्चर्य :

२००. सात हजार वर्ष पुराना गाँव

चीन के आग्नेय तट पर स्थित चिकियांग प्रदेश में जो खुदाई हुई है, उसमें नये शिला युग की संस्कृति से संबंद्ध सात हजार वर्ष पुराना एक गाँव प्रकट हो गया है। वहाँ पर काष्ठ निर्मित गाड़ियाँ, धान और भूसे के ढेर दिखाई दिये हैं। वहाँ की जनता ने ज्यादातर हड्डियों से निर्मित औजारों का उपयोग किया है। ऐसे उपकरण लगभग १८०० प्राप्त हुए हैं। मिट्टी के बर्तन के दो लाख टीकरे उपलब्ध हुए हैं। कई अनोखे पटेले भी इन खुदाइयों में प्राप्त हुए हैं।

वहाँ ४८ प्रकार के जानवरों की हड्डियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। उनमें अधिकांश हिरण, कछुए, भालू, बन्दर, बाघ, हाथी, गैंडे तथा अन्य पक्षियों और मछलियों की हड्डियाँ भी शामिल हैं। ख़ास बात यह है कि उस समय की जनता ने गुफाओं के जीवन से मुक्त हो आहार का संपादन करने के साथ खेतीवाड़ी और गृह-निर्माण का कार्य सात हज़ार वर्ष पूर्व ही प्रारंभ किया है।

भल्लूक मांत्रिक

[२]

[कालीवर्मा नामक क्षत्रिय युवक नौकरी की खोज में राजधानी की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे गाँववालों ने लुटेरों का समाचार सुनाया। कालीवर्मा ने गाँव के युवकों की मदद से लुटेरों का दमन किया। इसके बाद वह नगर के समीप पहुँच रहा था, तभी राजा जितकेतु के अश्वदल ने उस पर हमला करके उसे बन्दी बनाया। बाद...]

चन्द्रशिला नगर के घुड़ सवार कालीवर्मा को साथ ले नगर में पहुँचे। अनेक सैनिक एक व्यक्ति को घोड़े से बांधकर ले जा रहे थे, इसे देख नगर के लोग आश्चर्य में आ गये। कुछ लोगों ने अश्वदल के नेता से पूछा कि घोड़े से बंधा हुआ व्यक्ति कौन है? इस पर अश्वदल के नेता ने विजय के अभिमान में आकर कहा—"ओह, यह बंदी? इसका नाम तो कालीवर्मा है। यह हमारे राज्य के लिए ही नहीं, बल्कि पड़ोसी देश उदयगिरि के राजा दुर्मुख का भी प्रबल शत्रु है। जंगल में इसे बन्दी बनाने के लिए हमने जो यातनाएँ झेलीं, वर्णन के बाहर हैं।"

चन्द्रशिला तथा उदयगिरि दोनों राज्यों के शत्रु बने कालीवर्मा का वृत्तांत सुनने के ख्याल से कुछ लोग अश्वदल के पीछे राजमहल की ओर चल पड़े। अश्वदल

का नेता राजमहल के अहाते में अपने अनुचरों को रोक राजमहल के भीतर पहुँचा और एक सिपाही के द्वारा राजा जितकेतु के पास यह खबर भेज दी कि उसने कालीवर्मा को बन्दी बनाया है।

उस वक़्त राजा जितकेतु अपने प्रधान मंत्री के साथ पड़ोसी देश के राजा के हमले के संबंध में मंत्रणा कर रहे थे। उस वक़्त कालीवर्मा के बन्दी बनने का समाचार सुनकर वे बहुत ही प्रसन्न हुए और बोले–"महा मंत्री! मैंने सोचा था कि कालीवर्मा नामक इस क्षत्रिय युवक की वजह से हमें पड़ोसी देश के राजा के साथ युद्ध करने की नौबत आ गई है। अब तो वह हमारे हाथ आ गया है। खतरा टल गया है। अब आप बताइये कि हम इसे प्राणों के साथ दुर्मुख के पास भेज दें या इसे फांसी पर चढ़ाकर इसकी लाश भेज देना उचित होगा?"

"महाराज! राजा दुर्मुख के पत्र के अनुसार ये दोनों कार्य उनके लिए स्वीकार्य हैं। मगर हमें इस बात का सही सबूत चाहिए कि हमारे राज्य की सीमा से लुटेरों को उदयगिरि के राज्य में भगाने वाला कालीवर्मा यही है? वरना हमारा वचन भंग होगा और हमें राजा दुर्मुख के द्वारा नयी विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा!" मंत्री ने सुझाया।

"हमारे अश्वदल के नेता ने खबर भेज दी है कि राजद्रोही कालीवर्मा ही बन्दी बना है।" राजा जितकेतु ने कहा।

"इतने बड़े चन्द्रशिला नगर के राज्य में कालीवर्मा नाम के कई लोग हो सकते हैं। इसलिए आप स्वयं जाकर उसकी सुनवाई करके तब दण्ड दीजिए!" मंत्री ने सलाह दी।

इसके बाद राजा और मंत्री महल के बाहर के अहाते में पहुँचे, वे देखते क्या हैं? अहाते में जनता की भारी भीड़ लगी हुई है। उस भीड़ को देख राजा और मंत्री आश्चर्य में आ गये। इसके बाद

मंत्री का आदेश पाकर अश्वारोहियों ने कालीवर्मा को बन्धन मुक्त किया और उसे घोड़े पर से उतार दिया।

कालीवर्मा घोड़े से उतरकर निर्भयता पूर्वक राजा और मंत्री की ओर नज़र दौड़ाकर बोला—"महाराज! आप के सैनिकों ने जंगल में अचानक मुझ पर हमला करके बन्दी बनाया और मेरा अपमान किया है। इसलिए आप उन्हें उचित दण्ड दीजिए!"

ये बातें सुन राजा जितकेतु विस्मय में आ गये और बोले—"महा मंत्री! यह कैसी मूर्खता की बातें कर रहा है? मेरे दस साल के शासन में आज तक किसी अपराधी ने ऐसी धृष्टतापूर्ण बातें नहीं की हैं?"

इस पर मंत्री ने क्रोध में आकर हाथ उठाया और कहा—"अरे दुष्ट! तुमने महाराजा की अनुमति के बिना कुछ बक दिया. इस अपराध में इसी वक़्त तुम्हारा सिर काटा जा सकता है, फिर भी हमें तुम्हारा परिचय पाना है, इसलिए तुम बच गये। चन्द्रशिला नगर के जंगल में बसनेवाले लुटेरों को क्या तुमने ही उदयगिरि के राज्य में भगा दिया था? तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम कालीवर्मा है! मैं इसी राज्य का नागरिक हूँ। यह बात सच है कि हमारे देश के गाँवों में घुसकर जनता की संपत्ति व अनाज को लूटनेवाले लुटेरों का मैंने गाँववालों की मदद से सामना

किया और उनमें से कुछ लोगों को मार भी डाला। मगर जान के डर से उनमें से कुछ लुटेरे हमारे राज्य की सीमा को पारकर उदयगिरि राज्य के जंगलों में भाग गये होंगे, ऐसी हालत में इसका जिम्मेवार मैं कैसे बन सकता हूँ?" कालीवर्मा ने कैफ़ियत दी।

यह उत्तर सुन मंत्री क्रोध में आया और बोला–"महाराज! मैंने इससे जो सवाल पूछा, उसका अपराधी ने न केवल कड़ा उत्तर दिया, बल्कि वह उल्टा सवाल हम्हीं से कर रहा है! यह तो हमारे लिए अपमान की बात है! अब देरी ही क्यों? आप इसे उचित दण्ड दे दीजिए!"
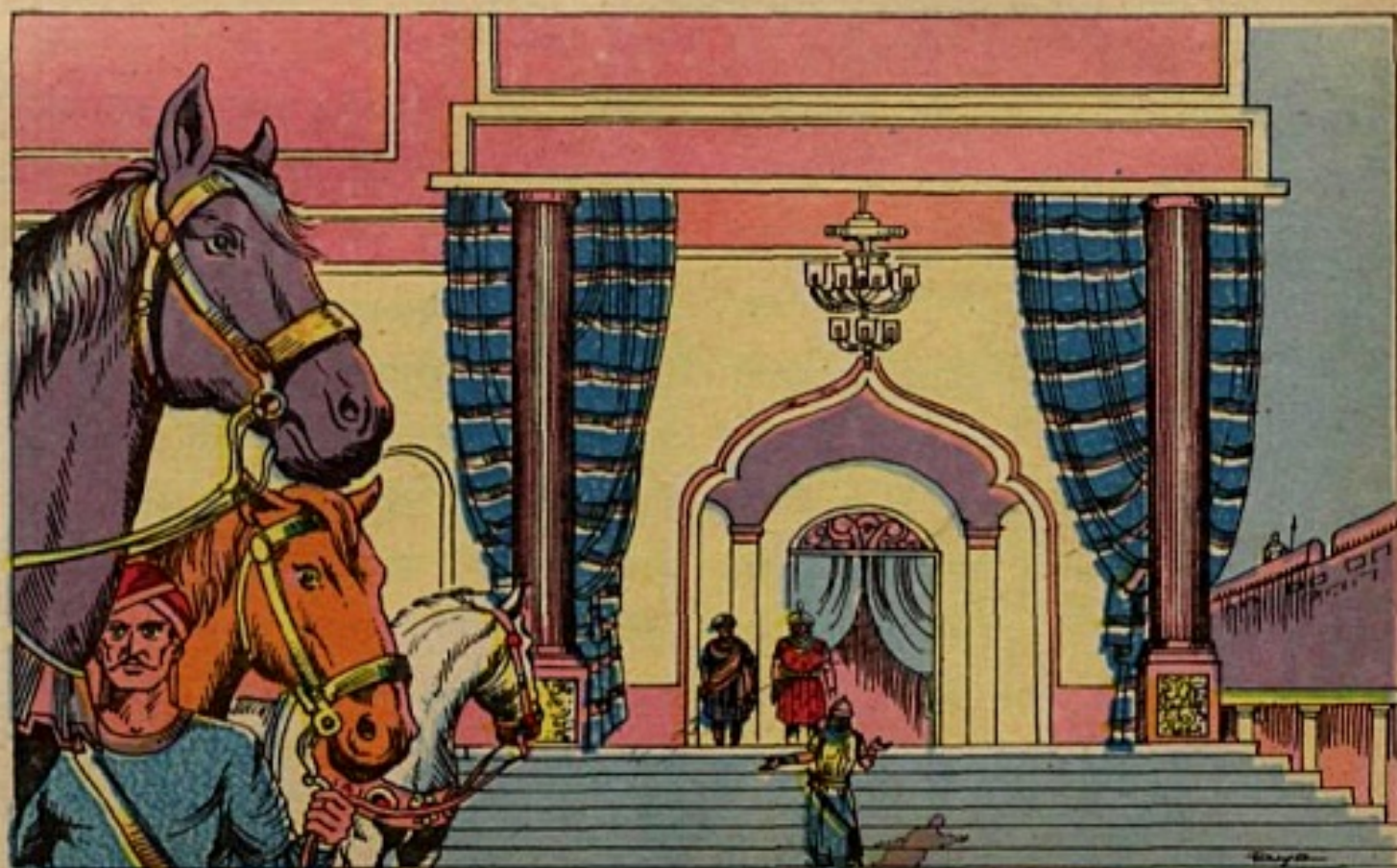
राजा जितकेतु ने एक बार कालीवर्मा की ओर तीव्र दृष्टि डाली और कहा–"ओह! यही वह कालीवर्मा है, जिसे हमें दण्ड देना है! सुनो वर्मा, तुमने मेरी अनुमति के बिना मेरे कुछ नागरिकों का वध किया और साथ ही पड़ोसी देश के राजा के साथ शत्रुता का कारण बन गये हो, इस कारण मैं तुम्हें मौत की सजा दे रहा हूँ!"

यह आदेश सुनते ही कालीवर्मा पल भर के लिए चकित रह गया, फिर संभलकर बोला–"महाराज! किस न्याय सूत्र के अनुसार आप मुझे यह दण्ड दे रहे हैं? मेरे पिताजी आप के पिताजी के दरबार में नौकरी करते हुए एक युद्ध में अपने प्राण खो बैठे हैं! मैं आप के यहाँ नौकरी करने के हेतु अपने गाँव को छोड़ इतनी दूर आ गया हूँ, जनता को लूटनेवाले लुटेरों का अंत करने का फल मुझे मृत्युदण्ड मिल रहा है?"

"यह तो तुम्हारी ज्यादती है!" मंत्री ने कड़ककर कहा, फिर सैनिकों से बोला–"तुम लोगों ने महाराजा का आदेश सुन लिया है न? कालीवर्मा को नगर की सीमा पर स्थित सिरस के वन में फांसी लगाकर उसकी लाश को तुम लोग उदयगिरि के राजा की सेवा में भेज दो!"

मंत्री के मुंह से ये शब्द निकलने की देरी थी कि जनता में कोलाहल मच गया। उनमें से कुछ लोग उच्च स्वर में चिल्ला उठे–"यह कैसा अन्याय है? महाराज! आप ने कालीवर्मा को जो दण्ड दिया है, उसके बारे में एक बार और विचार कर लीजिएगा! कालीवर्मा ने हम लोगों का उपकार किया है।"

"यह तो आश्चर्य की बात है! महाराजा को ही सलाह देनेवाले विवेकशील व्यक्ति इस नगर में हैं?" इन शब्दों के साथ मंत्री ने दांत भींचकर सैनिकों को आज्ञा दी–"उन चिल्लानेवाले राजद्रोहियों को पकड़कर कारागार में डाल दो।"

मंत्री का आदेश पाकर घुड़सवार सैनिकों ने अपने घोड़ों को भीड़ की ओर दौड़ाया। लोग भयकंपित हो तितर-बितर होने लगे। इसे देख महाराजा जितकेतु प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराकर बोले–"दण्डनीति ही इस असभ्य जनता को नियंत्रण में रख सकती है। महामंत्री! आप ने वक़्त पर सही आदेश जारी किया है।" यों महामंत्री की तारीफ़ करके राजा अपने महल की ओर चल पड़े। मंत्री ने भी उनका अनुसरण किया।

जनता की भीड़ को दूर भगाकर अश्वदल का नेता कालीवर्मा के निकट आया, तब बोला–"तुमने राजा का आदेश सुन लिया है न? बेचारे, तुम इतनी छोटी-सी उम्र में इस संसार को छोड़कर चले जा रहे हो! इस बात का मुझे बड़ा दुख है! मगर राजा का आदेश पत्थर की लकीर होता है!"

मंत्री की बातें सुन कालीवर्मा क्रोध के मारे कांप उठा। म्यान से तलवार खींचने का प्रयत्न करके फिर रुक गया, तब बोला–"तुम्हारे राजा का आदेश कैसा मूर्खतापूर्ण है, इसे जनता को छोड़ तुम लोगों में से किसी ने समझने की कोशिश नहीं की। पड़ोसी देश के राजा से डरकर जनता की भलाई करनेवाले मुझे यह

राजा जितकेतु फांसी पर लटकवाने जा रहे हैं! यह तो अन्याय है!"

"राज्य की भलाई की बातें केवल राजा ही जानते हैं! तुम और मैं क्या समझ सकते हैं? अच्छी बात है! चलो, तुम्हें जिस सिरस वन में फांसी पर चढ़ाया जा रहा है, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते शायद राजा तुम पर दया करके उस आदेश को रद्द करने का आदेश-पत्र जारी करें! इसके पूर्व कुछ अपराधी अंतिम क्षणों में इसी प्रकार फांसी की सजा से मुक्त हो गये हैं!" अश्वदल के नेता ने समझाया।

वास्तव में कालीवर्मा ऐसे आदेश की आशा नहीं रखता था। उसने सोचा कि किसी न किसी उपाय से सैनिकों से बचकर उसे भाग जाना होगा! यों विचार करके उसने अपने मन में निर्णय किया कि नगर की सीमा पार करने के बाद यह प्रयत्न करना ज्यादा उचित होगा!

अश्वदल के नेता ने अपने सारे अनुचरों को सावधान करके कालीवर्मा से कहा— "अब तुम्हारे हाथों में हथकड़ियाँ लगानी होंगी। अपने हाथ तो बढ़ाओ!" ये शब्द कहते वह कालीवर्मा के समीप पहुँचा।

"थोड़े क्षणों में मरनेवाले मेरे हाथों में हथकड़ियाँ क्यों? तुम्हारा डर तो यही है न कि मैं भाग जाऊँगा? लो, चाहे तो मेरी तलवार ले लो! इतने सारे हथियार-बंद सैनिकों के बीच में से मैं बेहथियार व्यक्ति कैसे बचकर भाग सकता हूँ?" इन शब्दों के साथ कालीवर्मा ने म्यान से तलवार खींचकर अश्वदल के नेता के हाथ दे दिया।

अश्वदल का नेता तलवार हाथ में ले संतुष्ट होकर बोला—"कालीवर्मा! कहा जाता है कि मरनेवाले की इच्छा की पूर्ति करना पुण्य है! अगर तुमने भागने की कोशिश की है तो हम यहाँ पर दस अश्वारोही हैं, हमारी दस तलवारें तुम्हारे बदन को छलनी बनाकर तुम्हें परलोक की यात्रा करा सकती हैं! खबरदार!"

इसके बाद कालीवर्मा के आगे पाँच सैनिक तथा पीछे पाँच सैनिक खड़े हो नगर की सीमा की ओर चल पड़े। उस समय जनता उन्हें न घेरकर मार्ग के किनारे खड़े हो राजा जितकेतु की दुष्टता की निंदा करने लगी।

एक घंटे के बाद सब लोग नगर की सीमा पर स्थित सिरस वन के समीप पहुँचे। उस वन के नजदीक़ में ऊँचे पहाड़ थे। एक पहाड़ी झरना बीस-तीस फुट ऊँचाई पर से नीचे की चट्टानों पर गिरते भयंकर ध्वनि कर रहा था!

अश्वारोहियों के साथ पेड़ों के बीच प्रवेश करते ही कालीवर्मा ने बचने के लिए उपाय सोचते चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर पूछा—"तुम लोग क्या यहीं पर मुझे फांसी लगाने जा रहे हो?"

अश्वदल का नेता कोई उत्तर देने जा रहा था, तभी एक भैंसे पर सवार एक काली आकृति उन्हें दिखाई दी। भैंसे पर सवार व्यक्ति सिर से पैर तक काला नक़ाब ओढ़े हुए था। पर पैरों के पास नक़ाब में छेद थे।

भैंसे पर सवार व्यक्ति अपने हाथ का परशु ऊपर उठाकर अश्वारोहियों की ओर तीव्र गति से बढ़ते ललकार उठा—"तुम लोग कौन हो? इस प्रधान बधिक के द्वारा इसके पूर्व शिरच्छेद किये गये लोगों के प्रेत हों? या नये नये शिरच्छेद कराने के लिए आये हुए लोग हों?"

भैंसे को अपनी ओर तेज़ी के साथ बढ़ते देख घोड़े भड़क उठे, जोर से हिनहिनाते इधर-उधर भागने लगे! भागने का यह अच्छा मौक़ा मानकर कालीवर्मा अपने घोड़े को आगे बढ़ाने ही वाला था, तभी भैंसे पर सवार व्यक्ति बिजली की गति के साथ आ पहुँचा, घोड़े की लगाम को मरोड़कर पकड़ करके बोला—"भूत-प्रेतों को सिरस के पेड़ अत्यंत प्रिय होते हैं; इसीलिए राजा लुटेरों और देश-द्रोहियों को मौत की सजा यहीं पर अमल कराया करते हैं! तुम डाकू हो या देशद्रोही ?"

"मैं इन दोनों में से कोई नहीं हूँ! लेकिन यह बताओ, तुम किस जाति के पिशाच हो?" कालीवर्मा ने लगाम को उसके हाथ से खींचने की कोशिश करते हुए पूछा।

इतने में तितर-बितर हुए सारे अश्वारोही वहाँ पर आ पहुँचे। अश्वदल के नेता ने क्रोधपूर्ण स्वर में भैंसे पर सवार व्यक्ति से पूछा—"अबे, यह उद्दण्डता कैसी? क्या तुम्हारे अंदर कोई पिशाच तो प्रवेश नहीं कर गया है?"

इस पर भैंसे पर सवार व्यक्ति कालीवर्मा के घोड़े की लगाम को छोड़कर बोला—"तुम नगर के प्रधान बधिक को ही अबे-तबे पुकारते हो? राजा किसी भी दिन तुम्हें मौत की सजा देकर मेरे पास भेज सकते हैं? तब मैं अपने ठूंठे परशु से ठूँठ की तरह काट डालूंगा!"

"अबे पियक्कड़! मैं यह अपमान सहन नहीं कर सकता!" इन शब्दों के साथ उसने झट से स्यान से तलवार निकाली। दूसरे ही क्षण कालीवर्मा ने तड़ाक से बधिक के हाथ से परशु खींच लिया और अश्वदल के नेता की गर्दन पर दे मारा।

अश्वदल के नेता की गर्दन धड़ से दूर जा गिरी। तभी दूर से यह प्रकार सुनाई दी—"आदि भल्लूक की जय! हे युवक! तुम अत्यंत पराक्रमी हो!" (और है)

चंदन का पेड़

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, आप जो यह श्रम उठा रहे हैं, इसे देख कोई आप को मूर्ख समझ सकता है! मगर कुछ लोग मूर्खों की भांति दीखते हुए भी अचानक विवेक का परिचय देते हैं। इसके उदाहरण के रूप में मैं आप को विक्रम वर्मा नामक राजा का वृत्तांत सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनिये!"

बेताल यों कहने लगा: विक्रम वर्मा मगध देश के शासक हैं। उनका मंत्री विषकुंभ है। राजा जितनी मात्रा में सज्जन हैं, उतनी मात्रा में मंत्री दुष्ट है। वह सारे दरबार की नौकरियों में अपने रिश्तेदार, सेवक व अनुचरों को नियुक्त

बेताल कथाएं

करके अपनी इच्छानुसार शासन कार्य चलाने लगा। अन्यत्र वह अनेक दुष्ट कार्य करता था, लेकिन राजा के सामने बड़ी विनयशीलता का प्रदर्शन करके अपनी असली प्रकृति को उनके सामने प्रकट होने नहीं दी।

राजा का विचार था कि मंत्री को सभी प्रकार के मामलों में पूर्ण स्वतंत्रता देकर उनकी अक़्लमंदी का उपयोग देश के अनुकूल करना है। इसलिए जब कभी विषकुंभ के प्रति कोई शिकायतें आ जातीं तो राजा उन पर विशेष ध्यान न देते थे और मंत्री को स्वेच्छापूर्वक सारे कार्य करने देते थे। मंत्री ने राजा की उस उदारता को उनकी कमज़ोरी मानी और मनमाने ढंग से व्यवहार करने लगा। इससे सारी प्रजा में भीतर ही भीतर असंतोष फैलने लगा।

राजा ने मंत्री को जो आजादी दे रखी थी, उसका दुरुपयोग करते जनता के जीवन को मंत्री ने दुष्कर बनाया और जो कर वसूल होता था, उसमें से थोड़ा हिस्सा हड़प लेता। अपनी दुष्टता को साबित करने की क्षमता रखनेवालों का वध कराकर बाक़ी लोगों को अपने अधिकार के बल पर थर्रा देता था।

विक्रम वर्मा के बचपन के गुरु राम शर्मा मंत्री के दुष्कर्मों को जानते थे। अनेक वर्षों तक जब राजा ने मंत्री पर कोई कार्रवाई न ली तो राम शर्मा को लगा कि शायद राजा मंत्री के दुष्टतापूर्ण कार्यों से अपरिचित हैं, इसलिए राजा को इस संबंध में चेतावनी देने के ख़्याल से एक दिन राम शर्मा राजा के दर्शन करने निकल पड़े।

राजा ने श्रद्धापूर्वक अपने गुरु का स्वागत किया, थोड़ी देर तक वार्तालाप करने के बाद उनके आने का कारण पूछा।

राम शर्मा ने अपने समीप में स्थित बुजुर्गों पर नजर डालते हुए कहा—"वत्स! वैसे कोई ख़ास बात नहीं है! राज्य की

हालत जानने के विचार से मैं देश का पर्यटन करते यहाँ पर आ पहुँचा ।"

राजा ने राम शर्मा से पूछा–"मेरे शासन के संबंध में आप के क्या विचार हैं?"

"शासन तो बहुत ही बढ़िया है, सारी जनता को चन्दन वृक्ष की भांति छाया देते हुए आप अपनी भलाई रूपी सुगंध को राज्य के चारों तरफ़ बिखेर रहे हैं!" राम शर्मा ने कहा ।

राजा ने पल भर गंभीरतापूर्वक विचार करके शांत स्वर में कहा–"गुरुजी! आपने मेरी आँखें खोल दीं । इसके लिए मैं आप को हृदयपूर्वक धन्यवाद समर्पित करता हूँ ।" इसके बाद उसी दिन राजा ने अपने गुप्तचरों के द्वारा मंत्री के बारे में सारा समाचार इकट्ठा किया और उसको पद से निकाला । इसके बाद जनता में असाधारण उत्साह देख राजा ने समझ लिया कि उन्होंने समय पर जो कार्रवाई की, वह सही है ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, मेरे मन में थोड़े संदेह हैं । राजगुरु राम शर्मा राजा को सचेत करने आये थे, पर उन्होंने मंत्री के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा, उल्टे राजा के शासन की प्रशंसा क्यों की? मेरा दूसरा संदेह यह है कि उस समय तब तक अपने मंत्री के बारे में शिकायतें सुनते रहने पर भी राजा ने उस पर कोई कार्रवाई नहीं की? पर राम शर्मा ने जब राजा के सवाल का सीधा उत्तर न देकर कोई और बात बताई, इस पर राजा ने मंत्री को उस पद से क्यों हटाया? इन दोनों संदेहों का समाधान जानते हुए भी न बतायेंगे तो आप का सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा ।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "राम शर्मा जिस कार्य से राजा के पास आये थे, उसे उन्होंने छिपाया नहीं, मगर उन्होंने राजा को सीधे चेतावनी न देकर व्यंग्य रूप में समझाया । इसके कई कारण हैं । एक तो यह है कि राम शर्मा राजा से

एकांत में नहीं मिले। बहुत दिनों के बाद आये हुए अपने बचपन के गुरु से राजा अनेक बुजुर्गों के समक्ष मिले। ऐसी हालत में राम शर्मा राजा से कह सकते थे कि हम एकांत में मिलकर बात करेंगे। मगर ऐसी हालत में मंत्री तत्काल उस रहस्य को भांप लेता। वह अत्यंत स्वेच्छापूर्वक व्यवहार करता है, उसके हाथ में अधिकार भी केन्द्रित है। इसलिए राजा की हानि भी कर सकता है। इसलिए हमें यह मानना होगा कि इस कारण राम शर्मा ने अपनी चेतावनी को व्यंग्य रूप में सुनाने का निश्चय कर लिया है। अलावा इसके राम शर्मा नहीं जानते थे कि राजा के भीतर बचपन की जो सूक्ष्म बुद्धि है, वह इस समय है या नहीं? अथवा वे मंद बुद्धि बन बैठे हो। अगर उनकी बुद्धि प्रखर है तो उस चेतावनी को व्यंग्य रूप में समझाने पर भी दोनों की कोई हानि न होगी। ऐसा न होकर राजा मंद बुद्धि बनकर विषकुंभ के हाथ का खिलौना बन गये हो तो सीधे चेतावनी देने पर भी कोई फ़ायदा न होगा। उल्टे उसी की हानि हो सकती है! इसलिए किसी भी दृष्टिकोण से विचार करने पर भी राम शर्मा का व्यवहार अत्यंत विवेकपूर्ण प्रतीत होता है। उन्हें जो चेतावनी देनी थी, उन्होंने दी। चंदन वृक्ष की छाया में जहरीले सांप आश्रय लेते हैं। उनकी सुगंध उन जहरीले सांपों को आकृष्ट करती है। इस चेतावनी को राजा ने तत्काल भांप लिया और अपने गुरुजी को धन्यवाद समर्पित किया। राम शर्मा के कथन में तथा राजा ने इसके पूर्व ही मंत्री के बारे में जो शिकायतें सुन रखी थीं, उनमें बहुत बड़ा अंतर था। पर राम शर्मा ने यह चेतावनी व्यंग्य रूप में दी, इस कारण राजा भांप सके कि हालत बहुत ही खराब है। इसलिए उन्होंने तुरंत उचित कार्रवाई की।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

विचित्र कर्जदार

एक गृहस्थ अपनी पुत्री का विवाह ठाठ से करके कर्जदार बना और उसका दीवाला निकल गया। उसने अपनी सारी जायदाद गाँव के दस बुजुर्गों के हाथ सौंपकर निवेदन किया कि जहाँ तक हो सके न्यायपूर्वक उसके कर्ज चुका दें।

यह ख़बर मिलते ही कर्जदाता बुजुर्गों के पास आये और अपने कर्ज साबित करवाकर हिसाब लगवाने लगे।

एक महाशय ने आकर बताया कि उसे गृहस्थ से पंद्रह रुपये मिलने हैं। क्योंकि उसने गृहस्थ के पुत्र के विवाह में पंद्रह रुपये भेंट किये थे, अब वह दीवाला निकल चुका है, इस कारण वह ज़िंदगी भर में उसे भेंट नहीं कर पाएगा, इसलिए गृहस्थ उसका ऋणी है।

बुजुर्गों ने उस महाशय से पूछा—"हमने सुना है कि गृहस्थ ने शादी के वक्त सब को बढ़िया भोजन खिलाया है। क्या यह बात सही है?"

"जी हाँ, एक एक थाल कम से कम पाँच रुपये का अवश्य होगा।" महाशय ने कहा।

"आप के घर से कितने लोग शादी में गये थे?" बुजुर्गों ने पूछा।

"हम कुल चार लोग गये थे।" महाशय ने उत्तर दिया।

"तब तो तुम्हीं उस गृहस्थ के पाँच रुपये कर्जदार ठहरे, जल्दी उसे चुका दो।" बुजुर्गों ने अपना फ़ैसला सुनाया।

वर की परीक्षा

श्रीपुर का जमीन्दार मदन गोपाल बड़ा ही कंजूस था। गौरी उसके इकलौती बेटी थी। वह विवाह के योग्य हो गयी थी। मदन गोपाल का विचार था कि गौरी उसकी संपत्ति की वारिस है। इसलिए उससे ज्यादा किफ़ायती करनेवाले वर को लाकर घर जमाई दामाद बना ले। वर ज्यादा सुंदर व ठाठ से रहनेवाला हो, यह कोई जरूरी नहीं है।

ये सारी बातें मदनगोपाल ने विवाह संपन्न करानेवाले दलाल को समझाकर ऐसे एक उपयोगी वर को लाने की सलाह दी। दलाल विष्णु शर्मा कई वर ढूंढ लाये। वर जो भी मदन गोपाल के घर आते, वे घर के आंगन में हंडी में स्थित जल से पैर धोकर अन्दर आ जाते थे। दलाल के साथ आनेवाले युवक पैर धोने के लिए जितने लोटों का जल काम में लाते थे, इस पर मदन गोपाल निगरानी रखता था। मदन गोपाल का विश्वास था कि जो युवक जल की किफ़ायती नहीं रखता, वह ज़िंदगी में किसी भी प्रकार किफ़ायती करना नहीं जानता। इस आधार पर दलाल के द्वारा लाया गया एक भी युवक मदन गोपाल को पसंद न आया।

आखिर दलाल विष्णु शर्मा ने ऊबकर किसी युवक को बुला लाना बंद कर दिया। गौरी को भी उसके पिता का यह व्यवहार पसंद न आया। उसने सोचा कि शायद उसका पिता उसकी शादी करने की इच्छा नहीं रखता है। क्योंकि गौरी जिन युवकों के साथ प्रसन्नतापूर्वक शादी करना चाहती थी, उन्हें भी उसके पिता ने इनकार करके लौटा दिया। उसने कभी अपनी पुत्री के विचार जानने का एक बार भी प्रयत्न नहीं किया। उसने सोचा कि

रामप्रसाद मण्डल

अब उसकी शादी कभी होने की नहीं है और अपनी यह हालत एक सहेली को बताई। गौरी की सहेली उमा का चचेरा भाई एक बार उमा के घर आया। उसने बगल के कमरे से गौरी और उमा की बातचीत सुन ली।

इसके दो दिन बाद विष्णु शर्मा एक युवक को साथ ले मदन गोपाल के घर पहुँचा। घर में प्रवेश करते समय विष्णु शर्मा ने तो हाथ-पैर धो लिये, मगर युवक वैसा ही अन्दर चला आया। युवक के पैरों में कागज़ लिपटे हुए थे। इसे देख मदन गोपाल ने सोचा, कहीं उस युवक के पैरों में खाज या फोड़े हों। क्योंकि वह नये चप्पल हाथ में लिए हुए था।

मदन गोपाल ने युवक से बताया कि वह हाथ-पैर धोकर तब अन्दर आ जावे। इस पर ध्यान दिये बिना युवक भीतर आकर कुर्सी पर बैठ गया। तब मदन गोपाल के मन में यह भी संदेह हुआ कि उसे खाज की बीमारी के साथ बहरापन भी हो।

युवक कुर्सी पर बैठकर रद्दी कागज़ों को अपने पैरों से निकालते हुए बोला—"मैंने अपने हाथ-पैर नहीं धोये, इसलिए आप कृपया अन्यथा न सोचियेगा। हम कई बार बाहर जाते हैं और अन्दर आ जाते हैं। इसलिए हर बार पानी बरबाद करना मुझे पसंद नहीं है। इसलिए मैं इस प्रकार पैरों में रद्दी कागज़ लपेट लेता हूँ।"

युवक के पैर एक दम साफ़ थे, उसे बहरापन भी न था। ये बातें स्पष्ट हो गईं। इस पर मदन गोपाल ने उस युवक से पूछा—"तुम अपने साथ चप्पल लाये हो न? उन्हें पहन क्यों नहीं लेते?"

"मैंने चप्पल इसलिए नहीं खरीदा कि उन्हें पहनकर घिसा दूं?" युवक ने स्पष्ट बताया।

"ऐसी हालत में धन खर्च करके चप्पल क्यों ख़रीदा?" मदन गोपाल ने पूछा।

युवक थोड़ा रुष्ट होकर बोला—"मैं यह सोचकर चप्पल हाथ में लिए घूमता हूँ ताकि आप जैसे लोग यह न सोचे कि यह चप्पल तक न ख़रीद पा सकनेवाला दरिद्र है। चप्पल को पैरों से ढोवे या हाथों से, इसमें कौन सा फ़र्क़ पड़ता है?"

उस युवक की किफ़ायती देख मदन गोपाल विस्मय में आ गया। फिर भी उसके मन में एक संदेह बना रहा। उसने पूछा—"बेटा, तुम नाराज़ न होगे तो मैं एक बात जानना चाहता हूँ। ये रद्दी कागज़ भी मुफ़्त में नहीं मिलते हैं न? उनका भी थोड़ा-बहुत दाम होता ही है। उन्हें वृथा खर्च करना..." यों कुछ कहने को हुआ।

युवक ने बीच में ही दख़ल देते हुए कहा—"आप अभी तक सही रास्ते पर नहीं आये। जानते हैं कि रोज़ मेरी रसोई कैसे बनती है? इन्हीं रद्दी कागज़ों से ही!"

ये बातें सुनने पर मदन गोपाल अवाक रह गया। फिर क्या था, उसने गौरी का विवाह उस युवक के साथ कर दिया।

मगर मदन गोपाल अपने दामाद का असली रूप नहीं जानता था। उसका वास्तविक नाम रामेशम है। उसने मदन गोपाल के घर आने के पहले उसकी कंजूसी का पूरा पता लगाया था। उसने सही ढंग से भांप लिया कि बढ़िया रिश्ते आने पर मदन गोपाल क्यों लौटा रहा है? उसकी कंजूसी के अनुरूप यह योजना बनाई और विवाह करानेवाले दलाल विष्णु शर्मा की मदद से इस योजना का प्रयोग किया और वह उसमें सफल निकला।

पिशाच का नाटक

एक गाँव में मंगाराम नामक एक व्यापारी था। उसने काफी संपत्ति जोड़ ली और आखिर अपने पुत्र श्याम गुप्त के हाथ सौंपकर सदा के लिए आँखें मूंद लीं। श्याम गुप्त ने जब उस संपत्ति को देखा, तभी उसे पता चला कि उसके पिता ने कितनी भारी संपत्ति जोड़ रखी है। उसने तिजोरी खोलकर सोना, चांदी और गहनों के ढेर लगाये, उन्हें देख श्याम का दिल कांप उठा। ऐसी भारी संपत्ति की चोरों से रक्षा करना साधारण बात न थी।

उस संपत्ति की रक्षा करने का श्याम गुप्त ने एक उपाय सोचा। उस धन को दो हंड़ियों में भर दिया। आधी रात के वक़्त उन्हें ले जाकर गाँव के बाहर भूतोंवाले बरगद के पास पहुँचा और उसके तने के पास गाड़ दिया। लोग इस भय से रात के वक़्त उस बरगद की ओर जाते न थे कि बरगद पर भूतों का निवास है। अपने धन की रक्षा के वास्ते श्याम गुप्त ने न केवल पिशाचों का भय बनाये रखा, साथ ही उसी ने एक पिशाच का अभिनय किया।

क्योंकि उसने जो धन गाड़ रखा था, रात के वक़्त उसे ही स्वयं उसका पहरा देना था। इस वास्ते श्याम गुप्त रात के वक़्त सबकी आँखें बचाकर पिशाच का वेष धारण करता और रात भर वह पेड़ की छाया में घूमता और मुंह अंधेरे घर लौट आता था।

इसके बाद गाँव में यह अफ़वाह फैल गई कि बरगद के नीचे कोई पिशाच घूमा करता है। श्याम गुप्त ने भी गाँव भर में प्रचार किया कि उसका पिता पिशाच बनकर बरगद के आश्रय में रहता है। साथ ही इधर कई लोगों ने पिशाच को खुद देख

कमला सोलंकी

भी लिया था। इस कारण सारे गाँव के लोगों ने इस बात पर यक़ीन किया कि मंगाराम पिशाच बनकर बरगद का आश्रय ले चुका है। इस वजह से अंधेरे के फैलते ही लोग घर से बाहर निकलने से डरने लगे। जिन लोगों ने बरगद के समीप पिशाच को देखा था, वे लोग बुख़ार के शिकार हो गये। इसलिए लोग मंगाराम के पिशाच बनाने का वृत्तांत तिल का ताड़ बनाकर सुनाने लगे।

इस कारण गाँव की हालत में परिवर्तन आया। काम-धंधे ठप्प हो गये। खेतों में रात के वक़्त पहरा न देते थे। पड़ोसी गाँवों के चोर स्वेच्छापूर्वक फ़सल लूटने लगे। गाँव का कोई मनुष्य या जानवर मर जाता तो उसे पिशाच की करतूत मानने लगे। इस तरह गाँव का जीवन अस्त-व्यस्त हो गया।

गाँव में दरिद्रता का नंगा नाच होने लगा। यह भी श्याम गुप्त के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ। अपने यहाँ का माल ऊँचे भाव पर बेचकर वह दुगुने-तिगुने लाभ बटोरने लगा।

इस हालत में गोविंद अपने कुत्ते के साथ उस गाँव में आ धमका। गाँव में क़दम रखते ही उसने मंगाराम के पिशाच के बारे में तथा गाँव की दयनीय हालत भी सुनी। उसे बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा कि जनता में जो पिशाच का भय फैला हुआ है, उसे दूर करने पर ही उनकी ज़िंदगी सुधर सकती है। पर इस कार्य में लगने के पहले उसने मंगाराम के पिशाच को एक बार देखना चाहा।

उस दिन रात को गोविंद निर्जन प्रदेश में स्थित पिशाचोंवाले बरगद के पास पहुँचा और उस पर जा बैठा। आधी रात के वक़्त श्याम गुप्त बरगद के नीचे आया, पिशाच का वेष बनाकर बरगद की छाया में टहलने लगा। गोविंद के दिमाग में तरह-तरह के विचार पैदा हुए। कोई मंगाराम के पिशाच

का अभिनय करते जनता को भयभीत बना रहा है। आखिर किसलिए? इसके पीछे उस व्यक्ति का कोई स्वार्थ होगा! अपने स्वार्थ के पीछे जनता को नाना प्रकार की यातनाएँ देनेवाले उस दुष्ट को जनता के सामने लाना होगा।

यों विचार कर गोविंद जब श्याम गुप्त मुंह अंधेरे अपने घर लौटने लगा तब वह भी उसके पीछे चला आया और उस मकान के मालिक के बारे में सारी जानकारी हासिल की। गाँववालों ने गोविंद को बताया कि श्याम गुप्त मंगाराम का बेटा है और मंगाराम अपार धन कमाकर मर गया है। वही अब पिशाच बनकर गाँववालों को सता रहा है।

गोविंद ने सोचा कि श्याम गुप्त अपने पिता के पिशाच बन जाने की अफ़वाह फैलाकर पिशाच के वेष में जनता को भयभीत बना रहा है, इस करनी के पीछे श्याम गुप्त का कोई स्वार्थ होगा। अपने घर की अपार संपत्ति चोर लूट जायेंगे, इस भय की चिंता तक किये बिना श्याम गुप्त रात के वक़्त बरगद के नीचे पहरा देता है तो इसके पीछे कोई प्रबल कारण जरूर होगा।

उस दिन अंधेरे के फैलते ही गोबिंद नक़ली दाढ़ी व मूंछें रखकर श्याम गुप्त के घर पहुँचा और उच्च स्वर में पुकारा— "मंगाराम! हे मंगाराम! सुनो तो!" श्याम गुप्त ने किवाड़ खोलकर गोबिंद

को पल भर परखकर देखा, तब पूछा–"तुम कौन हो? तुम्हें क्या चाहिए?"

"मैं जोगीन्दर का पुत्र हूँ! मंगाराम से मिलना चाहता हूँ।" गोविंद ने कुर्सी पर बैठते हुए जवाब दिया।

गोविंद की हिम्मत पर चकित हो श्याम गुप्त ने पूछा–"वे तो मेरे पिता हैं, उनके मरे काफी दिन हो गये हैं। आखिर उनसे तुम्हारा क्या काम है?"

गोविंद ने चिंतापूर्ण चेहरा बनाकर कहा–"मेरे पिताजी को आप के पिता से एंक लाख रुपये मिलने हैं। मैं वे रुपये वसूल करने आया हूँ। रुपये देकर जल्दी मुझे भिजवाने का प्रबंध कीजिए!"

श्याम गुप्त ने चौंककर पूछा–"क्या बोले? मेरे पिताजी तुम्हारे पिता के एक लाख रुपये के कर्जदार हैं? वे रुपये मुझे चुकाने हैं? वाह! खूब कहते हैं! मेरे पास इस मकान को छोड़ एक कौड़ी भी नहीं है! चाहे तो घर की तलाशी लो! मुझे अपने दिन गुजारने में ही बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है!" इन शब्दों के साथ श्याम गुप्त ने घर की तिजोरी खोलकर दिखाया।

सारे घर की तलाशी लेने के बाद गोविंद ने असली हालत भांप ली। श्याम गुप्त अपनी सारी संपत्ति पिशाचोंवाले बरगद के समीप में छिपाकर रात के वक़्त पिशाच वेष धारण करके पहरा दे रहा है और इस बात की सतर्कता बरत रहा है कि कोई उधर न पटके।

इस बात को भांपकर गोविंद ने धमकी भरे स्वर में कहा–"देखो श्याम गुप्त! कर्ज का मतलब कर्ज ही है। तुम्हें अपना घर बेचकर ही सही मेरे पिताजी का कर्ज चुकाना उचित होगा। शायद तुम मेरे पिताजी के बारे में सही जानकारी नहीं रखते!"

इस पर श्याम गुप्त ने क्रोध में आकर कहा–"फिर तुमने यह बात अपने मुँह से निकाली तो तुम्हारी जान की खैर न

होगी! मेरे पिताजी फिलहाल पिशाच बनकर घूम रहे हैं! मंगाराम के पिशाच का नाम सुनने पर इस प्रदेश के मेंढ़क तक पानी नहीं पीते! तुम्हारे जोगीन्दर हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं?"

ये बातें सुन गोविंद ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"ओह, यह बात है! मेरे पिताजी भी मरकर पिशाच बन गये हैं और हमारे गाँव के आसपास सचमुच धूम मचाये हुए हैं, पिशाच बनने के बाद वे एक-एक करके अपने सारे कर्ज़ वसूल कर रहे हैं! जो लोग कर्ज़ चुकाये बिना हठ करते हैं, उनसे ख़ून उगलवा रहे हैं! वे तुम्हारे पिताजी पर भी टूट पड़ेंगे, इस डर से कर्ज़ वसूलने मैं ख़ुद चला आया हूँ। मुझे अगर तुमने खाली हाथ वापस कर दिया तो मैं तुम्हारे प्राणों का जिम्मेवार नहीं हूँ। तुम यह कहकर मुझे धोखा दे सकते हो कि मेरे पास धन नहीं है! मगर क्या पिशाच नहीं जान सकता कि वास्तव में धन कहाँ पर है? तुम भी क्या नहीं जानते? अच्छी बात है, अब मैं चला!" यों कहकर गोविंद वहाँ से चला गया।

श्याम गुप्त को लगा कि उसका दिमाग चकरा रहा है, पिशाच का अभिनय करते लोगों को डराया जा सकता है; मगर सचमुच पिशाच पीछा करे तो उसका क्या हाल होगा?

फिर भी उस रात को श्याम गुप्त ने बरगद के नीचे जाकर पिशाच का वेष

बनाया, मगर उसके पैर कांपने लगे। जोगीन्दर पिशाच अपना धन वसूलने किसी भी क्षण आ सकता है! इस निर्जन प्रदेश में पिशाच का सामना करने की अपेक्षा अपना धन घर ले जाना कहीं उत्तम है। पिशाचों के भय से चोरों का भय कम डरावना होता है!

यों सोचकर श्याम गुप्त ने अपना धन जहाँ गाड़ रखा था, वहाँ खोदकर धन की हंडियाँ निकालीं। उसी समय पेड़ के ऊपर से गोविंद श्याम गुप्त के आगे कूद पड़ा। श्याम गुप्त मारे डर के चीख उठा। गोविंद ने उसे पकड़कर बरगद से बांध दिया, अपने कुत्ते को उसका पहरा देने छोड़कर गाँव में चला गया। गाँववालों को सूचना दी–"आप सब लोग आइये। मैं आप को मंगारामवाले पिशाच को दिखा देता हूँ।" यों समझाकर वह गाँववालों को बुला लाया। वे लोग श्याम गुप्त को पहचानकर चकित रह गये। गोविंद ने कहा–"आप में से किसी ने कल्पना तक न की होगी कि मरे हुए मंगाराम ने अनेक अन्याय और धोखा-धड़ी देकर इतना सारा धन कमाया होगा! यह खबर गाँववालों से छिपाने के हेतु श्याम गुप्त ने अपने पिता की कमाई को हंडियों में भरकर यहाँ पर गाड़ दिया और आप लोगों को इस बात का विश्वास दिलाया कि उनके पिता पिशाच बन गये हैं और ये महाशय रात के वक़्त इस धन का पहरा दे रहे हैं। आप ही लोग अब निर्णय कीजिए कि इसमें गाँववालों का खोया हुआ धन कितना है? सब का धन वापस कर दीजिए। जब तक आप लोग भूत और पिशाचों से डरते रहते हैं तब तक आप को हर कोई डरा-धमका सकता है। आप लोगों की जिंदगियाँ यों ही बरबाद होंगी।"

इसके बाद गोविंद ने श्याम गुप्त और धन की हंडियों को गाँव के मुखिये के हाथ सौंप दिया और वह कुत्ते को साथ ले दूसरे गाँव की ओर चल पड़ा।

शहर की हवा

सदानंद एक संपन्न गृहस्थ था। खेत-खलिहानों के साथ उसके यहाँ नारियल, आम वगैरह के बाग भी थे।

सदानंद का भानजा केशव दस साल की उम्र में ही अनाथ हो गया और सदानंद के आश्रय में पलने लगा। सदानंद हर सप्ताह साग-सब्जी और फल बैल गाड़ी पर लादकर हाट में बेच आता था। उस वक़्त केशव को भी अपने साथ ले जाता था। गाड़ी में जाते वक़्त केशव कोई फल खा लेता तो सदानंद उसे डांटता न था, उल्टे दो-चार फल और खाने को दे देता था। मगर शहर पहुँचने के बाद और हाट में भी उसका व्यवहार बदल जाता था। सड़े फल भी छू लेता तो खीझकर यही कहता—"उसे बेचने पर दस-बीस पैसे मिल जायेंगे, खाने से क्या मिलता है?" लेकिन फिर लौटती यात्रा में शहर की सीमा पार करने पर वह मामूली आदमी बन जाता था।

केशव जब बड़ा हो गया, तब सदानंद ने उसकी शादी की, तब समझाया—"केशव! मैंने तुम्हें एक घरवाला बना दिया है, अब तुम्हारे बच्चे होंगे। उनके वास्ते तुम्हें खूब धन कमाना होगा। देहातों में क्या रखा है? शहर में तो दोनों हाथों से कमाया जा सकता है! तुम जितना धन चाहते हो, ले जाओ और शहर में कोई व्यापार शुरू करो।"

वैसे केशव को गाँव का जीवन पसंद था। खेती करते मजे से दिन काटने का उसका विचार था। इसलिए उसने अपने मामा से कहा—"मैं शहर में चला जाऊँगा तो यहाँ पर खेत का काम कौन देखेगा? आप तो बूढ़े होते जा रहे हैं! आखिर आप की भी तो देखभाल करनी है।"

स यदेव वर्मा

सदानंद ने केशव की बातों पर ध्यान न दिया, उसने कहा–"मेरी चिंता न करो! मेरी तबीयत बिलकुल ठीक है। यहाँ के सारे काम मैं खुद संभाल सकता हूँ। तुम्हें शहर जाकर व्यापार करना ही होगा।"

आखिर लाचार हो केशव अपनी पत्नी को लेकर शहर पहुँचा, वहाँ पर एक होटेल खोल दिया। दो महीने बीत गये। उधर देहात में सारे काम सदानंद को ही देखने पड़ते थे, जैसे-तैसे मौक़ा पाकर वह अपने भानजे का व्यापार देखने शहर पहुँचा।

भोजनालय में से केशव ने दूर पर आनेवाले सदानंद को देखा, झट वह उठकर अपनी जगह एक नौकर को बिठा करके बोला–"मैं अभी आ जाता हूँ, तुम ग्राहकों से पैसे कड़ाई के साथ वसूल करो।" यों समझा कर केशव बाहर चला गया।

इसके थोड़ी देर बाद सदानंद भोजनालय में पहुँचा। पर पता चला कि केशव कहीं चला गया है, उसे भूख लगी थी, भर पेट नाश्ता किया। उठकर चलते हुए नौकर से बोला–"मैं केशव का मामा हूँ। अब उसी के घर जाता हूँ। उसके लौटने पर बतला दो कि मैं आ गया हूँ।"

"अजी, पहले नाश्ते के पैसे देते जाओ।" नौकर ने कहा।

"अरे, पैसे किसलिए देने हैं? यह होटेल तो मेरे भानजे का है।" सदानंद ने कहा।

"ऐसे कई लोगों को हमने देखा है! पहले पैसे देकर तब जाओ।" नौकर ने सदानंद का हाथ पकड़ कर रोका।

"अरे, में पैसे नहीं लाया!" सदानंद ने सकुचाते हुए उत्तर दिया।

थोड़ी देर बाद केशव ने लौटकर देखा, सदानंद आटा गूँथते दिखाई दिया। "अरे केशव! देखा, मुझे आज कैसी मुसीबत आ पड़ी है?" इन शब्दों के साथ उसने सारा वृत्तांत सुनाया।

"मामाजी! शहर के सारे लोग ऐसे ही होते हैं, ये लोग हमारे सच बताने पर भी यक़ीन नहीं करते!" केशव ने अपने मामा को सांत्वना दी।

उस दिन रात को केशव की पत्नी दोनों को खाना परोसते हुए बोली—"जिस नौकर ने आपके मामा का अपमान किया है, उसे नौकरी से क्यों हटा नहीं देते?"

"आख़िर उसने गलती क्या की है? यह भूल तो अज्ञान की वजह से हुई हैं कल से आकर जो चाहे सो खाने को कह दो, मामाजी नहीं तो और कौन खायेंगे?" केशव ने कहा।

ये बातें सुन सदानंद संतुष्ट हो गया। लेकिन जब दूसरे दिन सदानंद होटेल में पहुँचा तब वह अपने भानजे के व्यवहार पर विस्मय में आ गया।

केशव ने स्पष्ट शब्दों में कहा– "मामाजी, तुम जो चाहे सो खाओ। मगर उसका दाम पैसों सहित चुकाकर तब जाओ। हर चीज का हिसाब होना है। वरना मामाजी, इस शहर में हम व्यापार कैसे कर सकते हैं?"

उस दिन रात को केशव जब घर पहुँचा, तब उसकी पत्नी बोली–"आप तो इन्हें मिठाइयाँ नहीं खिलाते अपने होटेल में, मैं ही बनाकर खिलाती हूँ।"

ये बातें सुन केशव झिड़क कर बोला–"क्या कहा? मिठाइयाँ बनाकर खिलाओगी? छीः छीः; शहर में आने पर हमारा घर सराय बन गया है। आने-जानेवाले लूट मचाकर खाते जा रहे हैं। मामाजी की बात तो अलग है। फिर भी मिष्टान्न और मिठाइयाँ बनाकर खाने से क्या मिलता है? बेचने पर चार पैसे मिल जायेंगे? बेकार खर्च करना मामाजी को भी पसंद नहीं है!" खाने के बाद जब बातचीत चली तब सदानंद ने कहा–"केशव! तुम्हारा यह व्यवहार मुझे बिलकुल पसंद नहीं है।"

"मामाजी! मैं क्या करूँ? इस शहर की हवा ही कुछ ऐसी है। यह बात आप से छिपी नहीं है। मेरे बचपन में आप भी तो कुछ ऐसा ही कहा करते थे। मेरी हर इच्छा की पूर्ति करते हुए आपने मुझे पाला-पोसा, बड़ा किया; मगर हाट में पहुँचने पर आप मुझे एक भी फल छूने तक न देते थे। मैंने पहले ही बताया, मैं शहर में रहना नहीं चाहता, पर आपने मेरी बात नहीं सुनी।" ये शब्द कहते केशव ने गहरी सांस ली।

सदानंद रात भर सोचता रहा, सवेरे गाँव लौटते बोला–"केशव, हमें ये व्यापार और शहरी जीवन नहीं चाहिए। होटेल बेचकर तुम लोग घर चले आओ।"

अपने मामा के मुँह से ये शब्द निकलते ही केशव का दिल उछल पड़ा। एक हफ़्ते के अन्दर वह अपनी पत्नी को साथ ले गाँव लौट आया।
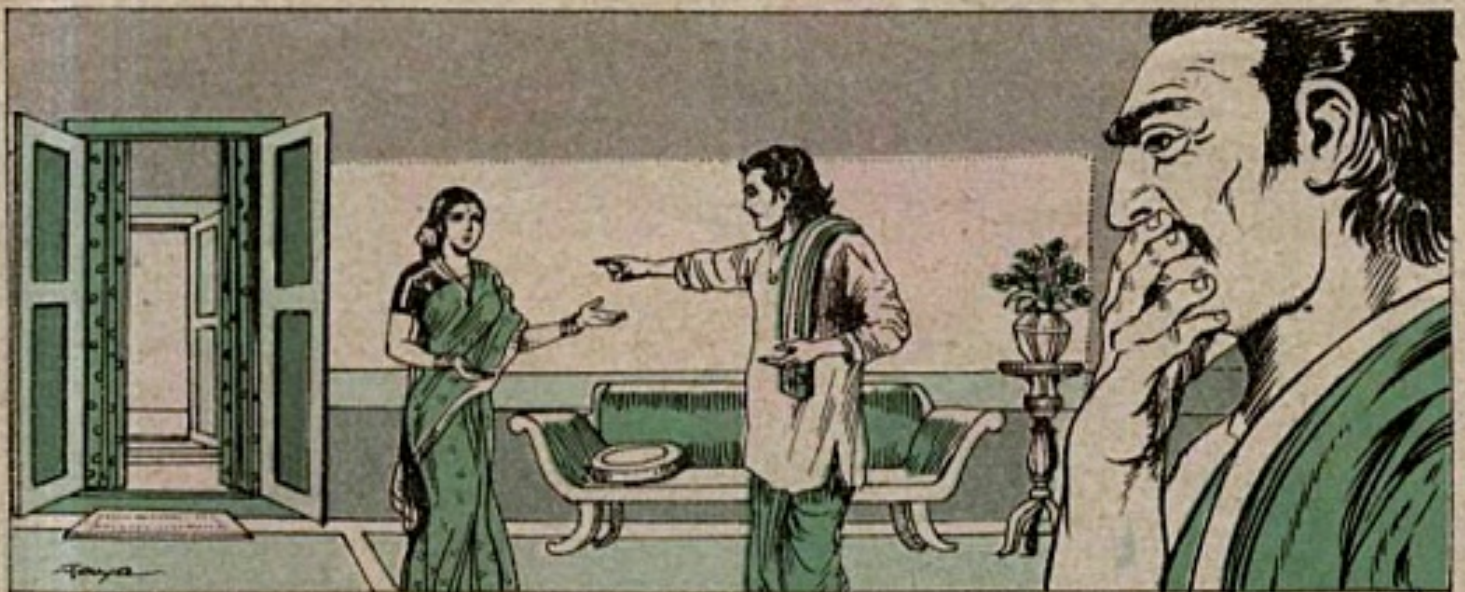
भिखमंगे

विजयपुरी के राजा जयदेव को लगा कि उनके राज्य में ऐसा प्रबंध करे जिससे कोई भिखमंगा न हो। उन्होंने ढिंढोरा पिटवाया कि राज्य-भर के सभी गरीब लोग अमुक समय पर हाज़िर हो जाय तो उन्हें खाना, कपड़ा और मकान की सुविधाएँ दी जायेंगी।

निश्चित समय पर हजारों गरीब राजमहल के सामने हाज़िर हो गये। उनकी संख्या देख राजा का सर चकरा गया। उनकी आजीविका का इंतजाम करने के लिए ख़ज़ाने का सारा धन भी ख़र्च किया जाय तो पर्याप्त न होगा। इस पर राजा चिंता में पड़ गये।

उस वक्त मंत्री ने प्रवेश करके गरीबों से कहा–"तुम लोगों में से जो मकान चाहते हैं, वे पहाड़ पर जाकर पत्थर तोड़कर लाइये। पत्थरों से तुम्हीं लोग मकान बनवा लोगे।"

उन लोगों में अधिकांश लोग भिखारी लोग थे, पर मेहनत करनेवाले न थे। इस पर अधिकांश लोग चले गये। थोड़े ही लोग बच रहें। तब राजा ने उनके वास्ते सारी सुविधाएँ करवा दीं।
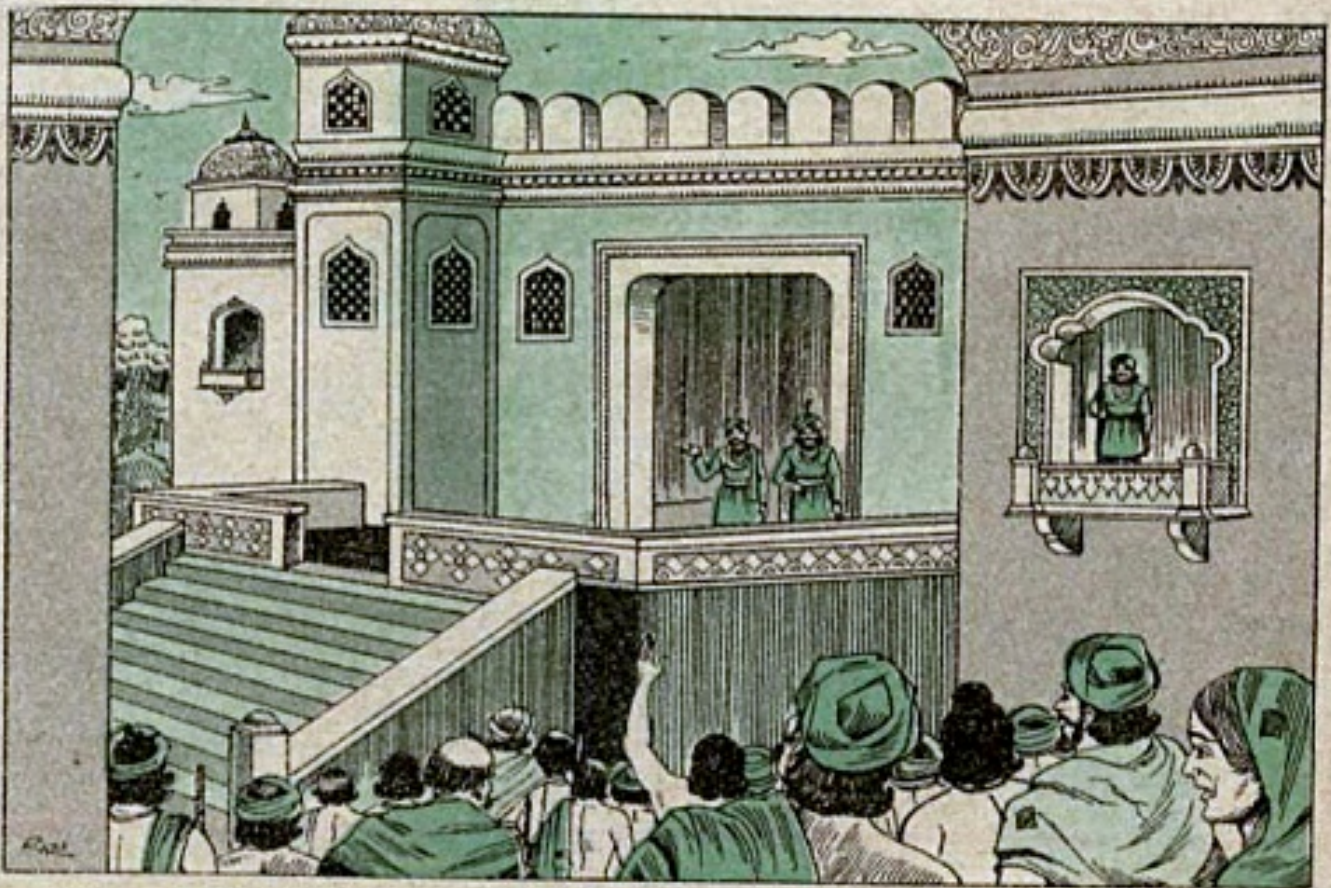
अगिया भूत

एक मण्डल का अधिकारी एक बार अपने शासन में जनता का हाल जानने के ख्याल से अपने परिवार के साथ चल पड़ा। रास्ते में अंधेरा फैल गया। थोड़ी दूर की यात्रा के बाद उसे दूर पर टिमटिमानेवाले दीप दिखाई दिये।

अधिकारी ने अपने परिवार के लोगों से कहा—"चलो, जिस दिशा में दीप दिखाई दे रहे हैं, उसी ओर चलो।"

"सरकार! वे तो अगिया भूत हैं। वहाँ पर शायद कोई श्मशान है।" अधिकारी के कर्मचारियों ने बताया।

"कोई बात नहीं, चलो! अगर वह श्मशान है तो उसके नजदीक़ में कोई गाँव होगा!" अधिकारी ने आदेश दिया।

वास्तव में वे दीप ही थे और वहाँ एक गाँव था। अधिकारी का आदेश पाकर कुछ लोगों ने गाँव के मुखिये मणिभूषण को हाज़िर किया। मुखिये ने अधिकारी को प्रणाम किया और उस रात को अधिकारी और उनके परिवार को ठहरने का उचित प्रबंध किया।

सवेरा होने पर अधिकारी ने गाँव का निरीक्षण किया। गाँव की हालत बड़ी खराब थी। जहाँ भी देखो, कूड़ा-करकट गंदा पानी फैला हुआ था। गाँव की पाठशाला शिथिलावस्था में थी।

अधिकारी ने मुखिये को डांटकर पूछा—"गाँव की यह हालत है तो तुम आज तक क्या कर रहे थे? उचित कार्रवाई तुमने क्यों नहीं की? अपने ऊपर के अधिकारियों को तुमने क्यों इसकी सूचना नहीं दी?"

"सरकार! मैंने कई बार गाँव का हाल बताते हुए अर्जियाँ भेज दीं, मगर कोई फ़ायदा न रहा! बड़े अधिकारियों से निवेदन करने पर वे बख्शीसें माँग रहे हैं।

सरोज गुप्त

फ़सल ख़राब होने के कारण लोग परेशान हैं। ऐसी हालत में मैं इन लोगों से बख्शीसें कैसे वसूल कर सकता हूँ?" मणिभूषण ने डरते-डरते कहा।

अधिकारी यह जवाब सुनकर चौंक पड़ा। उसी वक़्त दस हज़ार रुपये मणिभूषण के हाथ दे गाँव को सुधारने का आदेश दिया। उसकी मदद करने के लिए पंचायत के कर्मचारियों को नियुक्त किया।

इसके बाद अधिकारी उसी दिन अपने परिवार के साथ आगे बढ़ा।

मगर दूसरे दिन ही कोई त्योहार आ पड़ा। मुखिये के दामाद, बेटी और उनके बच्चे आ पहुँचे। उनके साथ मुखिये के चार-पाँच दिन मजे में बीत गये। उस ख़ुशी में मणिभूषण ने अपनी बेटी को एक हज़ार रुपये खर्च करके सोने की माला बनवाई और सबको नयें कपड़े ख़रीदकर दिये।

मुखिये की पत्नी ने सोने की करधनी की मांग की, पर मुखिये ने दस हजार में से जो रुपये ख़र्च किये थे, उसी के लिए पछता रहे थे। इसलिए पत्नी को समझाने की कोशिश की कि ये जनता के रुपये हैं; इन्हें ख़र्च करने का हक़ उसे नहीं है। मगर उसने सुनार को बुलवाकर उधार पर सोने की करधनी बनवा ली। लाचार होकर मणिभूषण ने जनता के रुपयों से सुनार का क़र्ज चुकाया। पंचायत के कर्मचारियों को जब इस बात का पता चला तब उन लोगों ने एक हज़ार रुपये क़र्ज माँगा। मणिभूषण ने विवश होकर उन्हें रुपये क़र्ज में दिया।

इसके बाद पंचायत के कर्मचारियों ने हिसाब लगाया कि कम से कम ख़र्च में कैसे गाँव की मरम्मत की जा सकती है। किसी भी दृष्टि से देखा जाय, गाँव की मरम्मत के लिए दस हज़ार रुपयों की जरूरत थी। मगर मुखिये के पास सिर्फ़ पाँच हज़ार ही बच गये थे।

इस बीच मुखिये की पत्नी ने मासिक वेतन पर एक नये नौकर को नियुक्त कर

लिया। नया नौकर एक दिन मुखिये की खाट के नीचे रखी रुपयों की थैली को लेकर भाग गया। यह खबर मिनटों में सारे प्रांत में फैल गई। मगर यह अफ़वाह फैल गई कि मुखिये का नौकर दस हज़ार रुपये चुराकर कहीं भाग गया है।

मण्डल के अधिकारी ने दूसरे ही दिन मुखिये को अपने यहाँ बुलवाकर पूछा– "बताओ, बाक़ी पाँच हज़ार रुपये कहाँ?"

मुखिये ने बताया कि उसका नया नौकर कुल दस हज़ार रुपये चोरी करके भाग गया है। मुखिये के मुंह से ये शब्द निकलने की देरी थी, अधिकारी के घर से मुखिये का नौकर आ पहुँचा।

मुखिये ने क्रोध में आकर डांटते हुए पूछा–"अरे बदमाश! तुम दस हज़ार रुपये लेकर कहाँ भाग गये?"

अधिकारी ने व्यंग्यपूर्ण हंसी हंसकर कहा–"मणिभूषण! तुमने वे रुपये ऐसी जगह रखे जिससे आसानी से उसकी नज़र उन रुपयों पर पड़ सके। तुम सारे रुपयों की चोरी का इलज़ाम इसके सिर मढ़ना चाहते हो? मगर तुमने कल्पना तक नहीं की होगी कि यह मेरा ही पुत्र है और तुम ये रुपये ठीक से खर्च करते हो या नहीं, इस शंका से तुम पर निगरानी रखने के लिए ही मैंने इसे तैनात किया है। तुम्हारी योजना के अनुसार चोरी तो हो गई, मगर साथ ही तुम्हारी पोल खुल गई है। तुम तुरंत पाँच हज़ार रुपयों का इंतज़ाम करो। गाँव की मरम्मत करने का काम मेरा पुत्र देख लेगा।"

मुखिये को लगा कि उसका सर कट गया है! उसने अपने मकान को गिरवी रखकर रुपयों का इंतज़ाम किया।

इसके बाद जल्दी ही गाँव की मरम्मत का काम पूरा हो गया। तब मण्डल के अधिकारी ने अपने कर्मचारियों को बताया– "तुम लोगों ने एक दिन दीपों को अगिया भूत बताया था, मगर वास्तव में जनता के रुपये अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करनेवाले लोग ही सच्चे अगिया भूत हैं।"

राजा की भूल

राजसेन नामक एक राजा के इकलौती बेटी श्याम वर्ण की थी और देखने में भी बद सूरत थी। इस कारण बहुत समय तक उसका रिश्ता तै नहीं हो पाया, जिससे राजा कीं चिंता बढ़ती ही गई।

आखिर राजा ने अपने मंत्री राहुल को बुलाकर आदेश दिया–"मंत्री महोदय, एक हफ़्ते के अन्दर मेरी पुत्री का विवाह पक्का हो जाना चाहिए। यह काम तुम्हें ही करना होगा। अगर एक हफ़्ते के अन्दर तुमने एक गुणवान युवक को मेरे दामाद के रूप में निश्चित नहीं किया, तो भरी सभा में तुम्हारा सर काटा जाएगा। अब तुम जा सकते हो।"

मंत्री राहुल ने रात-दिन एक करके राजा के दामाद की खोज की। पर कोई फ़ायदा न रहा। सब लोग जानते थे कि राजा की पुत्री एक दम काली-कलूटी और बद सूरत है। इसलिए कोई भी युवक उसके साथ शादी करने को तैयार नहीं हुआ। मंत्री उन थोड़े दिनों में भी बड़ी मेहनत करके कई पड़ोसी देश घूम आया, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा।

इस प्रकार छे दिन बीत गये। अपने पति को चिंतित देख मंत्री की पत्नी ने इसका कारण पूछा। मगर राहुल ने सच्ची बात नहीं बताई। अंत में मंत्री ने राजा का आदेश और उसके श्रम का सारा वृत्तांत सुनाकर बताया कि दूसरे दिन भरी सभा में उसका सर काटा जानेवाला है।

मंत्री राहुल की पत्नी ने समझाया– "आप इस बात की बिलकुल फ़िक्र न कीजिएगा। इसका कोई न कोई उपाय सोच लेंगे।" इस पर मंत्री की हिम्मत बंध गई। राहुल निश्चिंत भोजन करके

रमाकांत मिश्र

बैठा रहा, लेकिन उसकी पत्नी ने उसे कोई उपाय नहीं बताया।

दूसरे दिन राजसेवक मंत्री के घर आये और राजा का आदेश सुनाकर मंत्री को दरबार में ले गये। राजा ने भरी सभा में मंत्री से पूछा–"मंत्रीवर! क्या तुमने राजकुमारी के लिए कोई रिश्ता तै किया है?"

"जी नहीं, महाराज!" मंत्री ने जवाब दिया। इस पर राजा ने क्रोध में आकर राजसेवकों को आदेश दिया कि वे मंत्री का सर काटने के लिए उचित प्रबंध करे।

इतने में राहुल की पत्नी फटे-पुराने वस्त्र धारण कर एक शिशु को अपनी गोद में ले सभा में आ पहुँची। राजा को पता न था कि वह औरत मंत्री राहुल की पत्नी है।

राजा ने उस औरत से पूछा–"कहो बहन, तुम क्या चाहती हो?"

"महाराज! मुझे बचाइये! मेरा बच्चा आसमान सर पर ले बराबर चिल्लाता और रोता है, इस कारण मेरे पति मुझे पीटते हैं और मारने की धमकी देते हैं!" मंत्री की पत्नी ने शिकायत की।

"शायद बच्चा किसी बीमारी से परेशान होगा! उसके रोने की जिम्मेवार तुम कैसे हो सकती हो? मैं उस मूर्ख को कड़ी सजा दूँगा।" राजा ने आवेश में आकर कहा।

इस पर मंत्री की पत्नी प्रसन्न हो झट बोल उठी–"महाराज! क्या पता कि आप की पुत्री के विवाह के न होने में शायद उसके अन्दर कोई कमी हो? इस वास्ते आप मंत्री को नाहक़ क्यों दण्ड दे रहे हैं? मैं मंत्री की पत्नी हूँ। कृपया मेरे पति को बचाइये।"

ये बातें सुन सभा में बैठे सब लोगों ने हर्षनाद किये। राजा को अपनी भूल मालूम हो गई। उन्होंने उसी वक़्त मंत्री को मुक्त किया और भारी सभा में राजा ने मंत्री से अपनी करनी के लिए क्षमा माँग ली।

स्वर्ग और नरक

सोमवर्मा नामक धनवान ने अपनी ज़िंदगी भर में कभी किसी प्रकार का दान नहीं किया था। आख़िर जब यमदूत उसकी खोज में आये, तब उसे एक उपाय सूझा। उसने यमदूतों से कहा–"मैं अपनी जायदाद में से आधा अपने पुत्रों के नाम लिखकर बाक़ी आधा दान-धर्म करने के लिए वसीयतनामा लिखना चाहता हूँ। तुम लोग थोड़े क्षण रुक जाओ।"

"हमें यह अधिकार नहीं है, तुम यमराज से पूछ लो।" यमदूतों ने कहा।

सोमवर्मा ने अपने पुत्रों से बताया कि वह ज़िंदा होकर वसीयत लिखेगा, उसका दाह-संस्कार न करे। उसने यमराज से अवधि माँगी, यमराज ने स्वीकृति दी।

सोमवर्मा के पुत्रों ने यह सोचकर अपने पिता के दहन-संस्कार का प्रबंध किया कि अगर उनके पिता ज़िंदा होकर लौट आयेंगे तो उनकी आधी जायदाद उन्हें नहीं मिलेगी। इस बीच सोमवर्मा ज़िंदा हो उठ बैठा और अपने पुत्रों पर नाराज़ हो सारी जायदाद दान करने की वसीयत लिख डाली। इस कारण वह स्वर्ग चला गया।
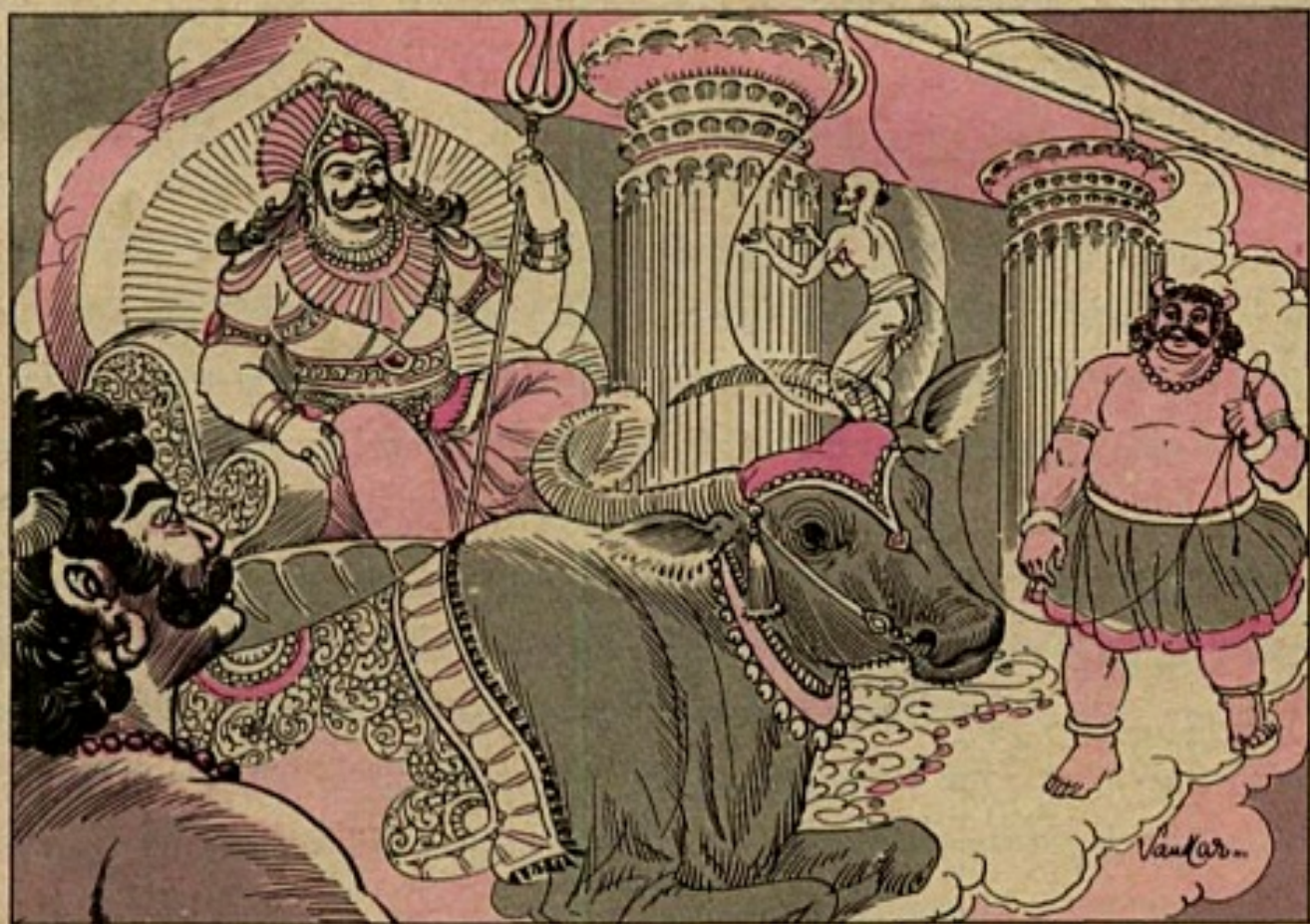
दुर्गा का पति

दुर्गावती का पति गंगाराम बड़ा आलसी था। शादी के बाद वह अपने गाँव को छोड़ दुर्गावती के घर आ पहुँचा। उस दिन से दुर्गावती ही उसका पालन करने लगी। गंगाराम वक़्त पर खाकर मजे से आराम किया करता था।

दुर्गावती हर तरह का काम किया करती थी। वह दूध दुहकर बेच देती, उपले बनाती, दो-चार घरों में रसोई बनाकर रख आती। जिस किसी के घर कोई काम आ पड़ता, तो वह वहाँ पहुँचकर सारा काम खुद कर देती! गाँववाले सब उसकी मदद की दिल खोलकर तारीफ़ किया करते थे।

एक दिन दुपहर को गंगाराम लेटे-लेटे ऊँघ रहा था, तभी किसी ने आकर पड़ोसी औरत से पूछा—"गंगाराम का मकान कहाँ है?" पड़ोसी औरत कह रही थी—"इस गाँव में गंगाराम नाम का कोई आदमी शायद नहीं है।"

गंगाराम ने जाकर किवाड़ खोला, देखता क्या है, उसी के गाँव का एक आदमी दर्वाजे पर खड़ा है। उसने पड़ोसी औरत से पूछा—"लो, देखो, यही हैं गंगाराम! तुम कहती हो, इस गाँव में कोई गंगाराम नामक आदमी है ही नहीं?"

"ओह! तुमने दुर्गा के पति के बारे में पूछा! मुझे क्या पता?" ये शब्द कहकर वह अपने घर के अन्दर चली गई।

आगंतुक व्यक्ति थोड़ी देर इधर-उधर की बातें कर मज़ाक़ में बोला—"तुम इस गाँव में दुर्गा के पति के रूप में पहचाने जाते हो और इस तरह हमारे गाँव की इज्जत धूल में मिला रहे हो?"

ये शब्द सुनने पर गंगाराम को बड़ा बुरा लगा। उसने सोचा कि वह गंगाराम

परिमल दत्त

के रूप में कैसे लोकप्रिय हो जाये, घर में बैठे रहने से यह मुमकिन न होगा। बाहर जाकर कोई काम-धंधा करना होगा! धन कमाना होगा।

दूसरे दिन गंगाराम दुर्गावती के जागने के पहले उठ बैठा, भैंसों के दूध दुहकर बेचने के लिए चल पड़ा।

उसने एक ग्राहक के घर पहुँचकर दर्वाजा खटखटाया। उस घर की मालिकिन ने आकर कहा–"हमें तो दुर्गावती दूध देती है।"

उस औरत के पति ने गंगाराम को परखकर देखा, तब बोला–"ये तो दुर्गावती के पति हैं। दूध ले लो।"

गंगाराम खीझकर बोला–"मैं आप को कतई दूध नहीं बेचूँगा।" यों कहकर वह वापस लौटा। दुर्गावती के पति के रूप में दूध बेचकर धन कमाना उसे पसंद न था।

गंगाराम दिन भर सोचता रहा, आखिर मुखिये के घर जाकर उसने कोई काम माँगना चाहा। इधर मुखिये के पुत्र की जब शादी हुई थी, तब दुर्गा ने ही रसोई आदि का सारा इंतजाम किया था। उन दिनों में गंगाराम केवल भोजन के वक़्त मुखिये के घर जाता रहा। इस वजह से मुखिये के घर के सभी लोग उसे अच्छी तरह से पहचानते थे।

गंगाराम को देखते ही मुखिये की बेटी चिल्लाकर अपने पिता से बोली–"बाबूजी, दुर्गा के पति आये हैं।"

अपनी बेटी की पुकार सुन मुखिया बाहर आया। इस बीच गंगाराम वहाँ से चला गया। उस वक़्त गंगाराम ने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह दुर्गावती के पति के रूप में पहचाना जाना नहीं चाहता है। आखिर एक महाजन के यहाँ उधार लेकर गंगाराम ने अपना कोई निजी व्यापार शुरू करना चाहा।

महाजन ने कहा–"मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो? गिरवी के बिना मैं तुम्हें कैसे रुपये ब्याज पर दे सकता हूँ?"

पर महाजन के एक नौकर ने कहा– "मालिक! ये तो हमारे घर दूध देनेवाली दुर्गावती के पति हैं। अगर इन्होंने हमारा कर्ज नहीं चुकाया तो हम दूध के हिसाब में अपने रुपये जमा कर सकते हैं।"

इसके बाद महाजन कर्ज देने को तैयार हो गया, मगर गंगाराम लेने से इनकार करके तेजी से घर वापस चला आया।

उसे अब अपनी ज़िंदगी से नफ़रत हुई। वह एक बैरागी की मदद से सन्यासी बन बैठा। छे महीने बाद अपने गाँव लौट आया।

एक गृहस्थ ने अपनी पत्नी से कहा– "यह कोई सन्यासी बेचारे कड़ी धूप में पैदल चलकर आये हैं। इन्हें छाछ दे दो।"

"माँ, सन्यासी को चावल दो।" यों कहते एक लड़की अपनी माँ से बोली।

गंगाराम ने अपने मन में सोचा, लोग भले ही उसे गंगाराम नाम से न पुकारे, मगर दुर्गा का पति नहीं पुकार रहे हैं, यही गनीमत है। यों विचार करते गंगाराम एक तालाब की मेंड पर पहुँचा। उसी वक़्त दुर्गा सामने से आ गुजरी। उसने पूछा–"तुम चाहे हज़ार वेष क्यों न बनाओ, मेरी आँखों को धोखा नहीं दे सकते? तुम्हें तो वक़्त पर खाना खिलाती रही, आखिर तुमने सन्यास क्यों ले लिया है?"

गंगाराम ने मान लिया कि वह दुर्गा का पति कहलाना नहीं चाहता है। इस कारण उसने ऐसा किया है।

"तुम्हें लोग नाहक़ क्यों दुर्गा का पति पुकारेंगे? पत्नी और बच्चों की परवरिश करना पति का धर्म है। तुम मेरी मेहनत पर निर्भर रहकर घर में पड़े रहे। आइंदा तुम मेहनत करके मेरी परवरिश करो। गंगाराम की पत्नी के रूप में पहचाने जाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है। तुम अपने गाँव में गंगाराग ही हो न? चलो, हम वहीं चले जायेंगे।" दुर्गा ने समझाया।

ये बातें सुनने पर गंगाराम की आँखें खुल गईं। उसी वक़्त गंगाराम साधारण वस्त्र पहनकर पत्नी को साथ ले अपने गाँव चला गया।

वैणिक जयधर

गुणधर एक प्रसिद्ध वैणिक थे। अपने प्रदेश में उनकी समता कर सकनेवाला दूसरा वैणिक न था। जमीन्दार अपने घर में कोई उत्सव होता तो गुणधर के द्वारा जरूर वीणा का कार्यक्रम करवा लेता। अन्य समयों में भी जमीन्दार अपने रिश्तेदार और मित्रों के मनोरंजन के वास्ते गुणधर के द्वारा वीणावादन कराकर आनंद लूटा करता था।

गुणधर का सारा यौवन देशाटन में बीत गया। इस कारण विवाह करके स्थाई रूप से घर बसाने में उन्हें थोड़ा समय लगा। थोड़े महीने बाद उन्हें जयधर नामक एक पुत्र हुआ। जयधर जब तीन साल का था, तभी उसकी माँ का देहांत हो गया। इसके बाद उसकी काकी ने उसका पालन-पोषण किया जो विधवा थी।

जयधर को उसके पिता ने ही संगीत की शिक्षा दी। मगर गुणधर सदा-सर्वदा संगीत-सभा व सम्मेलनों में जाया करते थे, इस कारण जयधर की सारी-जिम्मेदारी उसकी काकी पर आ पड़ी। उनका परिवार वैसे आर्थिक दृष्टि से संपन्न न था। गुणधर ने अपनी कमाई में से थोड़ा-सा अंश भी बचा न रखा, बल्कि सारा धन अपने मित्र व सहयोगी कलाकारों के पीछे खर्च कर देते थे।

जयधर बीस वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते एक यशस्वी वैणिक के रूप में लोकप्रिय हुआ। उसके पिता अकसर उससे कहा करते थे–"बेटा, चाहे सभी लोग तुम्हारी विद्या की भले ही प्रशंसा करें, पर तुम्हारे वादन में अभी परिपक्वता नहीं आई है। तुम्हें अपनी गान-विद्या के द्वारा अपनी आजीविका कमाने की स्थिति
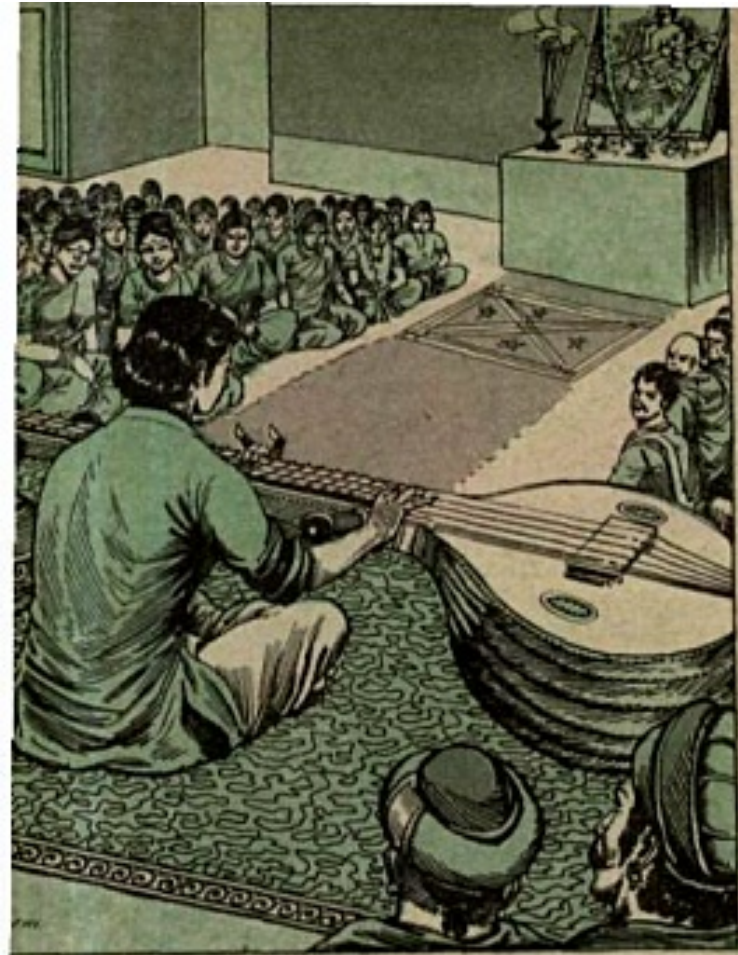
अभी तक नहीं आई है। चाहे तो तुम संगीत सभाएं किया करो, मगर तुम अपने संगीत को रुपयों के लोभ में पड़कर मत बेचो। मैं तुम्हें बताऊँगा कि कब तुम अपनी विद्या को अपनी आजीविका का साधन बना सकते हो।"

जयधर का अपने पिता के वचनों पर अपार विश्वास था। इसलिए उसने अपने पिता के चरण छूकर शपथ ली कि अपने पिता का आदेश मिलने पर ही वह संगीत विद्या को अपना पेशा बनाएगा।

समय बीतता गया। एक बार जब जयधर वीणावादन का प्रदर्शन करने के लिए देशाटन पर गया हुआ था, तभी उसके पिता गुणधर का अचानक देहांत हुआ। अपने पिता के अंतिम समय में उनके पास जयधर न रहा, इस बात का उसे बड़ा दुख हुआ। इसके बाद जयधर ने अपने पिता का चित्र एक ऊँचे आसन पर रखकर पुष्पों से उसकी पूजा करते सामने बैठकर वीणावादन की साधना करना प्रारंभ किया।

जयधर का संगीत सुनकर लोग कहा करते थे कि ये तो अपने पिता से बढ़कर यशस्वी वैणिक बन गये हैं। संगीत सभाओं के द्वारा दिन ब दिन जयधर की ख्याति चतुर्दिक फैलती गई, पर उसकी आर्थिक स्थिति बराबर बिगड़ती गई।

एक बार जमीन्दार ने जयधर से पूछा– "जयधर, तुम संगीत सभाएँ करते हो, उसका पारिश्रमिक क्यों नहीं लेते?"

जयधर हँसकर यही जवाब देता था– "मुझे तो अपने पिता की अनुमति प्राप्त नहीं हुई है। उन्होंने मुझे संगीत को अपना पेशा बनाने से मना किया था।"

सब लोग जानते थे कि जयधर ने अपने पिता के सामने इस बात की शपथ ली है। मगर यदि उसका पिता अब तक ज़िंदा रहता तो अवश्य जयधर को संगीत को अपना पेशा बनाने की सलाह दी होती! इस कारण जयधर के मित्र और

हितैषियों ने निर्णय किया कि किसी उपाय के द्वारा जयधर को संगीत को उसका पेशा बनाना चाहिए। इसके बाद जमीन्दार ने अपने सभी मित्रों से परामर्श लिया। उनमें जादूगर सोमनाथ भी एक था। सोमनाथ ने सुझाया—"हम जयधर के पिता से प्रार्थना करके उनसे जयधर को वीणा-वादन अपना पेशा बनाने की अनुमति प्राप्त कर ले तो क्या काम चल जाएगा?"

"मृत व्यक्ति की अनुमति कैसे प्राप्त करें?" सभी लोगों ने शंका प्रकट की।

"यह जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ दीजिए! बस, आप लोग मुझे इस काम में अपना सहयोग दीजिए!" सोमनाथ ने कहा।

एक दिन जमीन्दार ने जयधर को समझाया—"हमारे गाँव में एक मांत्रिक है। जब भी उसके अन्दर कोई शक्ति प्रवेश करती है तब वह मृत व्यक्तियों से बात करता है। हम उसके द्वारा तुम्हारे पिता से वीणावादन को अपना पेशा बनाने की अनुमति प्राप्त करते हैं। तुम्हारा क्या विचार है?"

जयधर ने पहले संकोच किया, फिर अपनी काकी की सलाह लेकर जमीन्दार से कहा—"अगर आप सब यही चाहते हैं तो ऐसा ही कीजिए।" संयोग की बात थी कि गुणधर का श्राद्ध निकट था। उस दिन एक दीर्घकाय व्यक्ति को लाया गया। वह थोड़ी देर गुणधर के चित्र के सामने बैठकर ध्यान में लगा रहा, तब उसने बदले हुए स्वर में कहा—"सुनो, तुम लोग एक सफ़ेद कागज़ का टुकड़ा ले आओ। उसे एक कागज़ की थैली में रखकर चिपकाकर चित्र के सामने रख दो। थोड़ी देर बाद कागज़ की थैली फाड़कर कागज़ का टुकड़ा निकाल करके देख लो।"

फिर क्या था, जमीन्दार के घर से कागज़ की थैली और सफ़ेद कागज़ का टुकड़ा लाया गया। कागज़ का टुकड़ा कागज़ की थैली से छोटा था। इसलिए

उसके अन्दर सट गया। उस कागज़ को थैली में रखकर चिपका करके चित्र के सामने रखा गया। थोड़ी देर बाद कागज़ की थैली फाड़कर कागज़ का टुकड़ा बाहर निकाला गया। कागज़ पर गुणधर की लिखावट में यों लिखा गया था–

"मैं तुम्हें वीणावादन को अपना पेशा बनाने की अनुमति देता हूँ। तुम्हारे पिता!"

जयधर ने उस कागज़ के टुकड़े को पढ़कर अपनी आँखों से लगाया। अपने पिता के चित्र के सामने प्रणाम करके कहा–"पिताजी! आपकी अनुमति मिल गई है। इसलिए मैं वीणा के पेशे में प्रवेश करता हूँ। मैं यथाशक्ति कोशिश करूँगा कि आपके यश में किसी प्रकार का कलंक न लगे।"

इसके बाद जयधर पर मानो सोने की वर्षा ही हुई। यह सब सोमनाथ की जादूगरी की महिमा थी। उसने एक ही परिमाण के दो सफ़ेद कागज़ के टुकड़े लिये, एक पर गुणधर की लिखावट का अनुकरण करते संदेशा लिखा। उस कागज़ को एक साधारण कागज़ की थैली में रखकर उसे थैली के खोल की ओर रख दिया। इसके बाद उसने उसी तरह की एक कागज़ की थैली ली, उसके दोनों पहलू के निचले हिस्सों को हटाकर पता लिखने की दिशा को खोल की ओर रहने दिया और उसे पहली थैली में रखा। इस प्रकार करने से कागज़ की थैली में एक गुप्त खाना बन गया। सफ़ेद कागज़ के टुकड़े की सब लोगों ने जांच की। जब उसे कागज़ की थैली में रखा गया, तब वह थैली खाली ही दिखाई दी। थैली को चिपकाते वक़्त सोमनाथ ने दोनों खोलों को जोड़कर चिपका दिया। इसके बाद जब थैली को फाड़कर कागज़ के टुकड़े को ऊपर निकाला गया, तब सफ़ेद कागज़ गुप्त खाने में रह गया और संदेशावाला कागज़ का टुकड़ा बाहर निकाला गया। जमीन्दार ने उस थैली को उसी वक़्त अपने हाथ में ले जेब में रख लिया।

वीर हनुमान

पांडव जुएँ में कौरवों के हाथों में हारकर वनवास कर रहे थे, एक दिन द्रौपदी भीमसेन के साथ वनविहार करते हिमालय के सौंदर्य का अवलोकन कर रही थीं। उस वक्त झंझावात में उड़कर एक अनोखा पुष्प द्रौपदी की गोद में आ गिरा। उसकी सुगंध से सारा वायुमण्डल महक उठा। उसकी असंख्य पंखुड़ियाँ थीं। वह पुष्प थोड़ा मुरझा गया था। वास्तव में वह सौगंधिका कमल था। कुबेर की नगरी अलकापुरी के समीप मानसरोवर के साथ जुड़े दलसरोवर में प्रति दिन एक ही सौगंधिका पुष्प खिलता है, कुबेर प्रति दिन पुष्पक विमान में कैलास जाकर सौगंधिका पुष्प द्वारा शिवजी की अर्चना करके पिछले दिन समर्पित पुष्प को वापस लाया करते हैं, ऐसा ही एक पुष्प फिसलकर हवा में उड़ चला आया था।

द्रौपदी उस पुष्प को देख अचरज में आ गयीं और ऐसा ही एक पुष्प लाने के लिए भीमसेन को प्रेरित किया। भीम अपने कंधे पर गदा रखकर हिमालय की तराइयों में स्थित कदलीवन में प्रवेशकर चले जा रहे थे। उसी वन में हनुमान एक विशाल केले के पेड़ के तने से सटकर बूढ़े के रूप में पैर फैलाये बैठे-बैठे रामचन्द्रजी की स्तुति कर रहे थे। उनकी पूंछ दूर तक रास्ते को रोके पड़ी हुई थी। भीमसेन ने उसे एक साधारण बंदर की पूंछ समझा। उसे पार करने में उनकी

राजसी वृत्ति उन्हें रोक रही थी, इसलिए उन्होंने अपनी दृष्टि दौड़ाकर चारों तरफ़ देखा। तब उन्हें राम नाम का जाप करते ऊँघनेवाले हनुमान दिखाई दिये। फिर क्या था, भीमसेन ने धरती को कंपा देनेवाली रीति में क़दम बढ़ाकर उस वृद्ध वानर को धमकाया।

हनुमान शिथिलावस्था में हांफते हुए बोले–"बेटा, मैं अत्यंत वृद्ध हूँ, मेरे अन्दर सहनशीलता नहीं है। तुम मेरी पूंछ को एक ओर हटाकर तब जाओ। कृपया थोड़ा श्रम उठाओ।"

भीमसेन ने पूंछ को हटाने की कोशिश की, मगर वह जरा भी नहीं हिली। तब दोनों हाथों से सारी शक्ति लगाकर उसे हटाने का यत्न किया, मगर फिर भी कोई फ़ायदा न रहा।

इस पर हनुमान खीझकर बोले–"बेटा, तुम मेरी पूंछ को मरोड़कर मुझे दुख पहुँचा रहे हो? एक बूढ़े बंदर की पूंछ को तुम हटा नहीं पा रहे हो? ऐसी हालत में तुम कौन-सा कार्य साधने के लिए कंधे पर गदा रखे चल पड़े हो? तुम जैसे युवकों में जल्दबाजी होती है, मगर विवेकशीलता नहीं होती। तिस पर भी लोग अपनी प्रिय औरत की इच्छा की पूर्ति करने में आवश्यकता से बढ़कर जल्दबाजी दिखाते हैं? तुम्हारे भीतर भी ऐसी कोई बात नहीं है न?"

तब भीम क्रोध में आ गये, बोले–"तुम अपनी बाचालता त्यागते हो या नहीं?" इन शब्दों के साथ अपना गदा उठाकर हनुमान पर प्रहार करने को हुआ।

हनुमान ने मुस्कुराते हुए कहा–"ओह! तुम मुझे गदा-युद्ध के लिए ललकार रहे हो? इतने दिन गदा-विद्या का अभ्यास करके तुम एक बूढ़े पर उस विद्या का प्रदर्शन करना चाहते हो? तुम जैसे छोटे भाई हों तो बड़े भाइयों को वनवास करने की नौबत आएगी! हाँ, सुन लो! मेरे पास भी एक गदा है! पर वह भी मेरे

साथ बूढ़ा हो चला है।" यों समझाकर दूर पर स्थित अपने गदे को हाथ फैलाकर हाथ में लेना चाहा, पर संभव न हुआ। तब बोला-"भैया! थोड़ा वह गदा उठा लाओ तो सही! तुम तो मुझे गदा-युद्ध करने के लिए प्रेरित कर रहे हो न?"

भीमसेन गदा उठाने में थकावट का अनुभव करने लगे, तब हनुमान बोले-"हमारे जमाने में ऐसे ही गदे थे, मगर ऐसे टीन के गदे थोड़े ही थे? पुराने जमाने में तो हम पत्थरवाले गदे का ही प्रयोग करते थे।" यों समझाकर हनुमान ने गदे को काग की तरह ऊपर उठाया। भीम के सर पर रखकर आशीर्वाद देने की मुद्रा में गदे के सारे बोझ को उस पर उतारा।

भीमसेन ने पीड़ा के मारे कराहते अपने गदे से हनुमान पर प्रहार किया। हनुमान झट से उठ बैठे। गदा उठाकर हुंकार कर उठे। सारा कदलीवन गूंज उठा।

दोनों ने बड़ी देर तक गदा युद्ध किया, भीम का गदा छूटकर दूर जा गिरा। तब हनुमान ने अपना गदा फेंककर द्वन्द्व युद्ध के लिए ताल ठोंका। दोनों जब मल्ल युद्ध करने लगे, तब भीम को एक बात सूझ पड़ी। वह यह कि हनुमान चाहेंगे तो भीम को किसी भी क्षण परास्त कर सकते हैं। मगर हनुमान ने गदा युद्ध तथा मल्ल युद्ध में भीम से अपरिचित अनेक ऐसे कौशल दिखाये जैसे कोई गुरु अपने शिष्य को सिखाते हो! तब भीम हनुमान के चरणों के पास घुटने टेक बोले-"महानुभाव! मैं समझ गया हूँ कि आप हनुमान हैं। मैं भी वायुदेव के अनुग्रह से पैदा हुआ व्यक्ति हूँ। कुंती का पुत्र हूँ! मेरा नाम भीमसेन है और युधिष्ठर का छोटा भाई हूँ।"

इस पर हनुमान ने भीम को वात्सल्यभाव से ऊपर उठाया और कहा-"हाँ भैया! हम दोनों वायुदेव के पुत्र हैं।" इसके बाद भीम ने अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करते

हुए निवेदन किया—"महानुभाव! मैं आप के विशाल रूप के दर्शन करना चाहता हूँ।"

"भाई, यह द्वापर युग है! इसलिए तुम मेरे संपूर्ण विश्व रूप को देख नहीं सकते! फिर भी मैं तुम्हें संतुष्ट करने लायक़ रूप दिखाता हूँ।" इन शब्दों के साथ हनुमान ने अपने शरीर को आकाश मण्डल तक फैलाया, अपनी पूँछ उठाकर आसमान को लपेटते हुए गर्जन किया। भीम चौंक गये और उस रूप को न देख सकने की हालत में पूर्व रूप को प्राप्त करने का निवेदन किया। तब हनुमान ने अपने विश्व रूप को वापस कर लिया।

हनुमान ने भीम से पूछा—"भाई, तुमने यह नहीं बताया कि तुम किस काम पर चले आये हो?" भीम ने अपना समाचार सुनाया।

"भीमसेन! दलसरोवर की रक्षा केशिकी नामक एक यक्षिणी कर रही है। वह अत्यंत प्रचण्ड स्वभाव की है। उसके सामने बल और पराक्रम काम नहीं देते। उसके मायाजाल से बचना कठिन है। मैं राम नाम का जो जाप कर रहा हूँ, वही तुम्हें सावधान करेगा! उस वक़्त तुम सावधान रहो। याद रखो, यक्षिणी बड़ी शिव भक्तिन है। मुट्ठी भर मेरे रोयें अपने साथ ले जाओ। जब भी यक्षिणी तुम्हें रोकेंगी, एक एक रोया उसके सामने गिराते जाओ। जहाँ जहाँ रोयां गिरेगा, वहाँ वहाँ पर एक शिव लिंग उत्पन्न होगा। तब यक्षिणी उसकी सहस्त्रनामार्चना करते बैठ जाएगी! तब तुम अपना काम संपन्न कर लो।" यों समझाकर हनुमान ने अपनी पूंछ के गुच्छे से रोयें निकालकर भीम के हाथ दिये और उन्हें दलसरोवर का मार्ग दिखाया।

केशिकी ने दूर से ही हनुमान को देख लिया। तुरंत सम्मोहन स्वरूप धारण कर खेलने व नाचने लगी। भीम उसके समीप जाकर अपने को भूल गये। उस वक़्त

राम नाम उनके कानों में गूंज उठा। भीम अपने को संभालकर आगे बढ़े। यक्षिणी ने अनेक प्रकार से भीम को अपने मायाजाल में फंसाना चाहा, लेकिन वह सफल त हो पाई। आखिर खीझकर उसने अपने विकृत रूप में भीम को रोका।

भीम ने हनुमान के दिये रोयें को उनके सामने गिरा दिये। उस वक़्त जो शिव लिंग उत्पन्न हुआ, उसके सामने साष्टांग दण्डवत करके केशिनी स्तोत्र पाठ करने लगी। उसकी आराधना समाप्त होने के पहले ही भीम दल सरोवर में उतर पड़े और सौगंधिका कमल को तोड़कर भाग गये। केशिनी ने प्रचण्ड वेग के साथ भीम का पीछा किया। उसके केश आग की लपटों जैसे फैलकर भीम के चतुर्दिक व्याप्त हो गये।

भीम मार्ग मध्य में रोयें गिराते केशिनी को आराधना करने का अवसर प्रदान करके हनुमानवाले कदली वन में जा पहुँचे।

उस वक़्त सौगंधिका पुष्प हनुमान को दिखाते हुए भीमसेन बोले–"महानुभाव! आप के अनुग्रह से मैं अपने काम में सफल हो पाया। पर साथ ही मैं आप से निवेदन करता हूँ कि भविष्य में कौरवों के साथ हमारा जो युद्ध होने जा रहा है, उसमें भी आप हमारी सहायता करने की कृपा करें। मैं सारे पांडवों की तरफ़ से आप से प्रार्थना करता हूँ।"

इस पर हनुमान ने समझाया–"भीमसेन, मैं इस युग में युद्ध नहीं करूँगा। तुमने मुझ से सहायता की याचना की, इसलिए संग्राम के समय में तुम्हारे भाई अर्जुन के रथ पर झण्डे का आश्रय लेकर तुम लोगों की रक्षा करूँगा। तुम लोगों की अवश्य विजय होगी। तुम निश्चिंत यहाँ से चले जाओ। सौगंधिका पुष्प द्रौपदी को देकर उसकी इच्छा की पूर्ति करो। माया हिरण की कामना करके सीताजी ने अनेक विपत्तियाँ मोल ली हैं। उससे मेरी तरफ़ से बताओ कि ऐसी इच्छाओं की कामना करना उचित नहीं है। यह भी बताओ

कि शिवजी की अर्चना करके सौगंधिका पुष्प को वैसे ही रहने दे, मगर जब वह अपनी वेणी गूँथ लेगी, तब शिवजी का नाम लेकर उसे अपनी वेणी में धारण करे। शिवार्चना करने पर तुम लोगों का शुभ होगा और कुबेर की संपत्ति भी प्राप्त होगी। साथ ही सौगंधिका पुष्प कभी मुरझायेगा तक नहीं।" यों समझाकर हनुमान ने भीम को आशीर्वाद दे भेज दिया। भीम ने द्रौपदी के द्वारा सौगंधिका पुष्प से शिवजी की अर्चना कराई। हनुमान के वचन भी उसे सुनाये। द्रौपदी वे बातें सुन लज्जा के मारे पल पर चुप रही, तब मुस्कुराते बोली–"मैंने सौगंधिका पुष्प की कामना की। इसीलिए तो उस महानुभाव की सहायता हमें प्राप्त हो गई है। मेरी इच्छा के कारण हमारा हित ही तो हो गया है?"

इस पर भीम के साथ सभी पांडव एक साथ बोल उठे–"हाँ, हाँ! तुम ठीक कहती हो!" वे सब हनुमान के अनुग्रह पर बहुत प्रसन्न हुए।

इसके बाद पांडवों ने नियमानुसार बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास समाप्त किया, तब कौरवों के पास कृष्ण को दूत बनाकर भेजा। श्रीकृष्ण के हितवचनों की दुर्योधन ने

परवाह नहीं की। संधि नहीं हो पाई। युद्ध अनिवार्य हो गया। फलतः युद्ध की दुंदुभि बज उठी। अर्जुन के रथ पर फहरानेवाले झण्डे पर हनुमान भी सूक्ष्म रूप में उड़ चले। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के रथ का सारथ्य किया। विजय पताका उज्वल रूप में उड़ चली।

कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध संपन्न हुआ। श्रीकृष्ण रथ सारथी बनकर चक्र धारण करके चाबूक ले घोड़ों को हांकने लगे। इस प्रकार अर्जुन के द्वारा दिग्विजयपूर्वक युद्ध कराया। अर्जुन विजय के नाम से विख्यात हुए। श्रीकृष्ण विजय सारथी या पार्थ सारथी कहलाये।

इसके पूर्व ही भीमसेन ने प्रतिज्ञा की थी कि जब दुश्शासन द्रौपदी के केश पकड़कर सभा भवन में खींच लाया था, तब भीम ने कहा था कि दुश्शासन के रक्त से द्रौपदी के केश भिगोकर वेणी गुंथवा लूंगा। अपने इसी वचन के मुताबिक़ युद्ध में भीम ने दुश्शासन की छाती फाड़कर उस रक्त से द्रौपदी के केशों को भिगो दिया। तब द्रौपदी ने वेणी गूंथकर उसमें सौगंधिका पुष्प धारण किया और विजयध्वज के रूप में स्थित हनुमान को प्रणाम किया।

इसके बाद गदा युद्ध में भीम ने दुर्योधन की जांघ तोड़ दी। इस प्रकार भीमसेन की सारी प्रतिज्ञाएँ संपन्न हुई। समस्त कौरवों का नाश हुआ। पांडवों की विजय हुई।

श्रीकृष्ण ने हनुमान का अभिनंदन करते हुए कहा–"हनुमान! तुमने अपनी कार्यदक्षता के द्वारा पिछले युग में श्रीरामचन्द्र की सहायता की। इस युग में विजयध्वज के रूप में उड़कर तुमने युधिष्ठिर को विजय पहुँचाई है।"

ये शब्द सुनकर हनुमान ने विनयपूर्वक कहा–"महात्मा! जब आप ने चक्रपाणी हो महारथी अर्जुन का सारथ्य किया तो विजय क्यों प्राप्त न होगी? क्रियासिद्धि से बढ़कर बल कौन-सा है? मैं केवल एक चिह्न मात्र हूँ!"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो! तुम भविष्य में क्रियासिद्धि के चिह्न बनकर रह जाओगे! किसी भी युग या क्षेत्र में तुम्हारे चिह्नवाले झण्डे की विजय होगी, वह झण्डा विजयध्वज के रूप में चिरकाल तक यश प्राप्त करेगा!" यों श्रीकृष्ण ने आशीर्वाद दिये।

इसके बाद पांडवों के प्रणाम प्राप्तकर श्रीकृष्ण से विदा लेकर हनुमान गंधमादन पर्वत की ओर उड़ चले। गंधमादन पर्वत पर पहुँचने के बाद वीर हनुमान भक्ति पूर्वक राम नाम का स्मरण करते तपस्या में लीन हो गये।

सच्चा झूठ

शर्वाती वंश के वत्सराजा वीतहव्य के सौ पुत्र थे, वे एक बार सारे विश्व पर विजय प्राप्त करने निकल पड़े ।

उन लोगों ने काशी राज्य पर हमला करके वहाँ के राजा हर्यश्व तथा उनके पुत्र सुदेव का वध किया । पर सुदेव का पुत्र दिवोदास बचकर भाग गया ।

दिवोदास ने एक और राजधानी का निर्माण किया, पर वीतहव्य के पुत्रों ने उसका भी सर्वनाश करके दिवोदास को भगा दिया ।

आख़िर दिवोदास ने अपनी पत्नी के साथ महर्षि भरद्वाज के आश्रम में आश्रय लिया। उन्हें इस बात की चिंता थी कि उनके सारे पूर्वज मर गये और उन्हें भी कोई संतान नहीं है।

भरद्वाज ने दिवोदास को सलाह दी कि उनकी वंशलता को फैलाने के लिए यदि वह पुत्र चाहते हैं तो यज्ञ करे।

यज्ञ के परिणाम स्वरूप दिवोदास दंपति के एक पुत्र पैदा हुआ। उसका नामकरण प्रतर्द किया गया। वह बड़ा ही पराक्रमी निकला।

प्रतर्द क्षत्रियोचित सारी विद्याओं में प्रवीण निकला।

एक दिन दिवोदास ने प्रतर्द को अपने अपमान का समाचार सुनाकर कहा– "बेटा, तुम्हें मेरे वास्ते बदला लेना होगा।"

प्रतर्द ने कालांतर में सेनाएँ इकट्ठी कीं और अचानक वीतहव्य के राज्य पर हमला बोल दिया। वीतहव्य के सौ पुत्र युद्ध में काम आये, पर वीतहव्य भाग गया।

वीतहव्य ने आख़िर महर्षि भृगु के आश्रम में शरण ली। भृग ने उसे तत्वोपदेश करके उसे तपस्या करने की सलाह दी।

प्रतर्द वीतहव्य का वध करने के ख़्याल से महर्षि भृगु के आश्रम में आया और ललकारा—"अगर तुम क्षत्रिय हो तो मेरे साथ युद्ध करो।" भृगु ने जवाब दिया—"यहाँ पर सभी ब्राह्मण हैं; कोई क्षत्रिय नहीं है।"

प्रतर्द इस बात पर विश्वास नहीं कर पाया कि भृगु महर्षि झूठ बोलेंगे। मगर वीतहव्य को देखते ही प्रतर्द को मालूम हो गया कि वह बिलकुल बदल गया है। क्योंकि क्षत्रिय ब्राह्मण के रूप में परिवर्तित हो गया है।

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

एक राजा के यहाँ एक बार दो चित्रकार आये, दोनों ने दो चित्र बनाकर राजा के हाथ दिये। दोनों चित्रों में राजा मंदहास कर रहे थे।

पूरब से जो चित्रकार आया था, उसके चित्र में राजा के चेहरे पर स्वाभाविकता से अधिक झुर्रियाँ थीं और राजा का हँसनेवाला चेहरा रोने जैसा प्रतीत हो रहा था।

पश्चिम के चित्रकार के चित्र में राजा का चेहरा वैसे साधारण लग रहा था, मगर हँसनेवाले राजा का चेहरा और सुंदर प्रतीत हो रहा था।

राजा ने पश्चिम से आये चित्रकार को बहुत बड़ा पुरस्कार दिया और पूरब के चित्रकार को कुछ नहीं दिया। इस के बाद राजा पश्चिम के चित्रकार के चित्र की ओर स्थिर दृष्टि से देखते मुस्कुरा पड़े।

फिर क्या था? राजा के चेहरे में झुर्रियाँ उभर आईं, उनकी मुस्कुराहट रोते जैसी प्रतीत हुई; जैसे पूरब के चित्रकार ने अंकित किया था।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए सोच-समझ कर एक कार्ड पर उत्तम शीर्षक लिखकर "कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता" चन्दामामा, २ & ३, अर्काट रोड, वड़पलनी, मद्रास-६०००२६ के नाम भेज दीजिए। लिफ़ाफ़ों में प्राप्त उत्तरों पर विचार नहीं किया जाएगा।

कार्ड हमें सितंबर १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियाँ न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के नवम्बर '७८ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

जुलाई मास की प्रतियोगिता का परिणाम: "मोक्ष बनाम व्यापार"

पुरस्कृत व्यक्ति: अजय कुमार मिश्रा, कवाना सिंह शिवाला रोड़ राजा बाजार, लखनऊ-३

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर १९७८ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी।

M. Natarajan

★

Nirmal Kumar Tak

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों।

★ सितम्बर १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए, उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जुलाई के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : एक यह है चोर!

द्वितीय फोटो : दूसरा चौकीदार!!

प्रेषक : श्रीमती पी. द्विवेदी, १७ ए/४१ डब्ल्यू. ई. ए. करोलबाग, दिल्ली-११०००५

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी।

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor : NAGI REDDI.

చందమామ අම්බිලි මාමා

Chandamama, now published in twelve Indian languages including English and entertaining millions of readers in India, makes its debut in Srilanka. To the President and people of Srilanka, we dedicate our inaugural issue in Sinhala.

AMBILIMAMA

CHANDAMAMA

the monthly magazine for children through which the old become young and the young remain young.

চাঁদমামা **CHANDAMAMA** चांदोबा

ज़िन्दगी की सुहानी चीज़ों की तरह
हमेशा ताज़ा, हमेशा सजीव !
Pond's
Dreamflower talc
पॉण्ड्स
ड्रीमफ़्लावर
टाल्क
जिसकी सुगंध आपको हमेशा से पसन्द है
Pond's
CP-1829